ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -26 मार्च - I - 2024 अंक - 23 माउण्ट आबू Rs.-12

दादी रतनमोहिनी 'इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर' अवॉर्ड से सम्मानित

आईबीएच,इंग्लैंड के चेयरमैन डॉ. दिवाकर सुकुल ने लंदन से आकर दादी जी को दिया यह बहुमूल्य सम्मान

शांतिवन के विशाल डायमण्ड हॉल में देश-विदेश से आये हज़ारों भाई-बहनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ अवॉर्ड समारोह

शांतिवन। इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर,इंग्लैंड के चेयरमैन डॉ. दिवाकर सुकुल ने लंदन से आकर ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी तथा संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय भाई को 'इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर' अवॉर्ड से सम्मानित किया। यह अवॉर्ड समारोह शांतिवन के विशाल डायमण्ड हॉल में हज़ारों भाई-बहनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आईबीएच,इंग्लैंड के वाइस प्रेसिडेंट ब्र.कु. डॉ.दीपक हरके सहित अन्य वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनें उपस्थित रहे।

डॉ. दिवाकर सुकुल ने दादी कॉटेज में जाकर राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी से मुलाकात की। दादीजी ने उन्हें ईश्वरीय सौगात तथा वरदानों से भरपूर किया। साथ ही इस मौके पर दादी जी ने डॉ. दिवाकर सुकुल और डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को शॉल पहनाकर सम्मानित किया।

आईबीएच,इंग्लैंड के चेयरमैन डॉ. दिवाकर सुकुल ने ओमशान्ति मीडिया के ऑफिस का भी दौरा किया। इस दौरान उन्होंने ओमशान्ति मीडिया पत्रिका के संपादक राजयोगी डॉ. ब्र.कु. गंगाधर भाई को 'सर्टिफिकेट ऑफ एप्रीसिएशन' प्रदान किया तथा डॉ. ब्र.कु. गंगाधर भाई ने डॉ. सुकुल को ईश्वरीय सौगात भेंट की। डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके भी उपस्थित रहे।

दादी प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय की वर्तमान मुख्य प्रशासिका हैं।

दादी के जन्म का नाम लक्ष्मी था। उनका जन्म हैदराबाद सिंध (जो अब पाकिस्तान में है) के एक प्रसिद्ध व धार्मिक परिवार में 25 मार्च,1925 को हुआ।

13 वर्ष की छोटी उम्र में ही वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संपर्क में आईं।

ब्रह्मा बाबा से अपनी प्रथम मुलाकात में उन्हें पिता के सम्बंध का अनुभव हुआ।

इन रूपों में भी रही दादी की सेवायें

- राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के युवा प्रभाग की अध्यक्ष
- ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय, माउण्ट आबू में कार्मिक विभाग की निदेशिका
- राजस्थान ज़ोन में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की ज़ोनल हेड
- भारत में टीचर्स ट्रेनिंग की निदेशिका

तपस्या, सेवा और साधना का यह सम्मान है : दादी

ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल की ज़ोनल डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी एवं यूएसए के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. पवन भाई 'डॉक्टर्स ऑफ लेटर्स' की मानद उपाधि से सम्मानित

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन स्थित विशाल डायमण्ड हॉल में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में मणिपुर अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आध्यात्मिकता, नेतृत्व एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों हेतु ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल की ज़ोनल निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी एवं यूएसए के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. पवन भाई को 'डॉक्टर्स ऑफ लेटर्स' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आज यह सम्मान भाई-बहनों की त्याग, तपस्या, सेवा और साधना का सम्मान है। हज़ारों भाई-बहनों ने परमात्म आज्ञा पर अपने आप को अर्पण कर दिया। मानवता की सेवा के लिए ऐसा त्याग अपने आप में बड़ी बात है। अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि यहां सभी भाई-बहनों के जीवन का एक ही लक्ष्य है, विश्व शांति और विश्व परिवर्तन। मणिपुर अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. लोकेंद्र सिंह ने कहा कि यह उपाधि प्रदान करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं खुद को भाग्यशाली समझ रहा हूँ। संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि ब्र.कु. राज दीदी के नेतृत्व में पूरे नेपाल में भारतीय पुरातन संस्कृति, अध्यात्म एवं राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा जन-जन को दी जा रही है।

मणिपुर अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ने आध्यात्मिकता, नेतृत्व एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया यह सम्मान

संसार में रहें एक योगी की तरह...

संसार में रहना और उससे अलिप्त रहना, ये एक चैलेंज है। संसार में भी रहें और कीचड़ भी न लगे माना किसी के प्रभाव, लगाव और किसी के भी स्वभाव का हमपर असर न हो। ऐसा जीवन हो सकता है? कइयों को लगता है कि ये असंभव बात है, मुश्किल है। लेकिन हाँ, जीवन जीने के दो तरीके हैं, योगी जीवन और भोगी जीवन। 'भोगना' का मतलब ही है 'सफरिंग'। 'योगी' का मतलब है 'डिटैच'। इसलिए योगी को कमल पुष्प के ऊपर दिखाया जाता है। जीवन में दुनिया में रहना है, इसका मतलब कीचड़ है, कीचड़ का मतलब चैलेंज है, बातें हैं, अलग-अलग तरह के वायब्रेशन्स हैं, सिचुएशन्स हैं, लोग हैं, सबकुछ है, उसको छोड़ना तो नहीं है ना! उसको छोड़ना नहीं है और उसे भोगना भी नहीं है। उससे दूर जाना नहीं है लेकिन उसके बीच में रहते हुए उस कीचड़ का चिन्ह हमारे ऊपर नहीं आना चाहिए।

जैसे सफेद ड्रेस पहनकर बाहर चलते हैं, उस बीच हम ध्यान रखते हैं ना कि कीचड़ हमारे ऊपर न लग जाये। कभी बारिश हो रही है, कभी रास्ते में बहुत कीचड़ है, लेकिन जब हम चलते हैं तो हम किनारा करते हुए, अपने को बचाते हुए चलते हैं ना! उसी तरह हमें संसार में रहकर क्या-क्या ध्यान

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

रखना है कि वो कीचड़ हमपर नहीं आना चाहिए। ध्यान नहीं रखेंगे तो कीचड़ के छींटे हमपर लग जायेंगे। योगी जीवन का मतलब ही है ध्यान रखना, ध्यान से जीना कि जो सबकुछ आसपास हो रहा है, उसका दाग हमारे पर नहीं होना चाहिए। उसके लिए हमें हर सिचुएशन से ऊपर रहना पड़ता है और जो भोगी जीवन है, वह नीचे रहता है, मतलब कि हमारी जो आत्मिक ऊर्जा का वायब्रेशन है वो लो-लेवल का रहता है। जबकि योगी जीवन जीने वाले का वायब्रेशन उच्च स्तर का होता है। जब हम उच्च स्तरीय वायब्रेशन की स्थिति में स्थित हैं और चेकिंग करते हैं तो हमारे में देवत्व का एक सफेद रंग का सर्कल बनता है जिसको हम 'औरा' कहते हैं, व्हाइट औरा। जिसे देवताओं या धर्म-स्थापकों के पीछे व्हाइट सर्कल के रूप में दिखाते हैं। मतलब यह एनर्जी कैसी है, सबके प्रति शुभ, सुख देने वाली, सुकून देने वाली होती है, प्युअर होती है। ये किसी भी तरह के स्वार्थ, अहंकार, क्रोध से रहित होती है। जबकि भोगी जीवन वाले के वायब्रेशन का औरा काला होता है। काला का मतलब उनसे निकलने वाले वायब्रेशन्स स्वार्थ व क्रोध से भरे, दुःख व अशांति फैलाने वाले होते हैं। जब ऐसे वायब्रेशन होते हैं तो मनुष्य सफरिंग में होता है।

इसका मतलब यह नहीं कि योगी जीवन वालों के सामने चुनौतियां नहीं होती, समस्याएं नहीं होती! उनके सामने भी अनेक बातें, मुश्किलातें, अलग-अलग वायब्रेशन के लोग, चुनौतियां, समस्याएं भी होंगी, लेकिन उन प्रॉब्लम्स को फेस करने का तरीका हाई एनर्जी के रूप में होगा। चलता तो वो भी इस कीचड़ के मध्य ही है लेकिन वो अपना ध्यान रखेगा और इन सब बातों से वो अनटच रहेगा, माना उसका प्रभाव न हो ये ध्यान रखेगा। अगर ध्यान नहीं रखेगा तो वो भी सफर करेगा। तो हमें योगी जीवन को मेंटेन करते हुए अपने को ऐसा ही रखना है जैसे कमल का फूल कीचड़ में रहकर भी उस कीचड़ की बूंद उसे स्पर्श नहीं करती है। कीचड़ में रहकर वो खिला हुआ रहता है। कीचड़ में छुपी हुई सुंदरता को लेकर वो अपने को खिलाता है। एनर्जी वहां से ही लेता है, लेकिन दूसरों को पॉज़िटिव एनर्जी अर्थात् खुशबू देता है। तो हम भी ऐसा कर सकते हैं ना! इन बातों से अपना बचाव करते हुए जी सकते हैं ना! ये संभव है! डिफिकल्ट से डिफिकल्ट कई सारे प्रॉब्लम्स को हम हल करते हैं लेकिन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में छोटी-छोटी बातों में हम उसे नेगलेक्ट करते हैं जिससे बूंद-बूंद बनकर वैसा स्वभाव हमारा बनता जाता है और समय या परिस्थिति आने पर वो बैड एनर्जी का फोर्स हमें गलत कार्य करने को विवश करता है। इसलिए योगी जीवन वाला ध्यान रखने के कारण सांसारिक कीचड़ में रहते भी अपने को सेफ रखते हुए आगे बढ़ता है और दूसरों को भी अपने कृतित्व से सुख देता है और हाई एनर्जी में जीता है। बात सिर्फ ये है कि अपना ध्यान रखना कि कहीं काले कीचड़ का दाग मुझपर न लगे। ये तो कर सकते हैं ना!

अपना काम है सबको आत्मिक दान देना

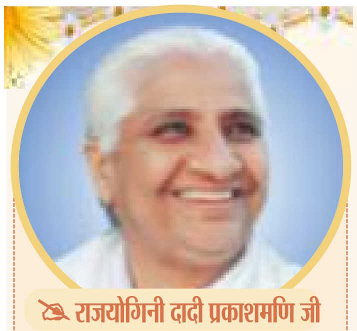

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्त्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है।

बाबा कहते बच्चे, अपने स्वभाव को शीतल बनाओ। बहुत-बहुत नम्रचित्त और मीठे बनो। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह रिहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्माण बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

हमें कुमार-कुमारियों का बहुत फिकरात रहता। हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउन्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखे हैं। इसलिए हम कन्ट्रोल करते- कुमार-कुमारियां मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे ये मेरे से सुना नहीं जाता। शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आँच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा- क्योंकि हल्के होकर चले। ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा- उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह भी आँसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया में हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग।

अभी हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्त्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं कि मैं इसे इतना स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी कांटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती- हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं रखो। झगड़े का कारण है एक-दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह ज़िन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूँ?

सच्चाई का बल बाबा को पकड़के रखता

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हम साउण्ड में आते साइलेन्स में रहें। इससे सम्पूर्ण पवित्रता क्या है, अपने आप खुद को अनुभव होगा। सम्पूर्णता है ही निर्विकारीपन की। सोलह कला सम्पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न, फिर सम्पूर्ण निर्विकारी। मेरे में कोई भी विकार का अंश न रहे। साइलेन्स में रहकर आवाज़ में आये, आवाज़ में आते संकल्प में थोड़ा भी अशुद्धि अंश मात्र भी न हो।

जो बात मेरे करने योग्य है वो तो मेरे को करनी पड़ेगी। फिर हिम्मत बच्चे की मदद बाप की, नियत साफ मुराद हासिल, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। अगर मैं कोई भी बात में हिम्मत नहीं रखती हूँ तो जैसे बाबा का जो कॉन्ट्रेक्ट साइन किया हुआ है हिम्मत बच्चे की मदद बाप की वो मैं कैन्सिल कर रही हूँ। बाबा ने मेरे में आशायें रखी हैं, उम्मीदें रखी हैं, कहाँ से उठा के कहाँ बिठाया है। अभी अपने को नालायक बना के, यह ख्याल करके हिम्मत को छोड़ेंगे तो क्या हाल होगा! तो हम लोगों को इतना एलर्ट, एक्यूरेट रहना है। कई बाबा के बच्चों ने मदद के आधार से हिम्मत नहीं छोड़ी है। पर हिम्मत और मदद के बीच में सच्चाई चाहिए। हिम्मत कभी अकेला काम नहीं कर सकती। सच्चाई का बल बाबा को पकड़के रखता है। बाबा मुफ्त में नहीं देता है, पहले सच्चाई को टेस्ट करता है। सच्चाई के आधार से भले कितने भी उतराव-चढ़ाव आयेंगे, दूसरा कोई मदद नहीं करेगा। स्वयं अपनी आत्म-अभिमानी सीट पर रहें तो बाबा मदद करता है, भले बात है सम्पूर्ण पवित्रता की, मैं मुख से कुछ नहीं कहूँ, पर वो सामने आये तो ओम शान्ति भी न कहूँ। अरे मुस्कुरा के ओम शान्ति करो ना, क्या मैं इतना बिज़ी हूँ! अगर मेरी दृष्टि ऐसी है तो क्या मैं आत्मा शुद्ध आत्मा की लाइन में हूँ? मैं अपनी बात देखूं, बाकी दूसरा कहाँ तक शुद्ध-अशुद्ध है, ऐसे नहीं। गंगा कभी यह नहीं कहती है, ये पापी है। पापी का काम है उसमें टुबकी लगा के पावन बनना। बाबा ने कहा है तुम मेरे मस्तक से निकली हुई गंगा हो। तुम मेरे माथे की लाज़ रखना। मेरे दिल में जो होगा, दिमाग ऐसा ही चलेगा। दिमाग में होगा तो दिल में अन्दर से वही फीलिंग होगी। तो आत्मा अन्दर से अपने दिमाग और दिल को देखे।

कोई न पूछे। सच्ची दिल है तो साहेब राज़ी है, परिवार मेरा है। कोई भी परिवार में ऐसा नहीं हो सकता है, जो मेरे को प्यार न करे। पर मेरे अन्दर प्यार नहीं है, यह प्यार का परवाह बल देता है। ज्ञान भी तभी अच्छा लगा है जब भगवान के लिए प्यार है, स्वयं के लिए प्यार है। अगर मेरे में हार्ट ही नहीं है तो हेड क्या काम करेगा! हार्ट, हेड, हैण्ड इसपर आधार है। जैसा दिल, दिमाग है, हाथ वैसा ही काम करेगा। अगर दिल दिलवाला के साथ है तो दिल कभी भारी नहीं होगा। दिल में दुःख आयेगा नहीं। दुःख देने का भी ख्याल नहीं आयेगा। दुःख देने का ख्याल आना भी अपवित्रता है। पवित्रता में सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं है। दृष्टि-वृत्ति एक बारी भी खराब हुई, उसमें चंचलता है तो वह हमें पवित्र बनने नहीं देगी। दृष्टि में हमारी रूहानियत, आत्मिक दृष्टि हो। एक बाबा के बच्चे हैं, किसके भी स्वभाव-संस्कार वश मेरी दृष्टि में उसके लिए दुविधा आई या दुःख महसूस हुआ। भले उसने मुझे धोखा दिया, उसका मुझे दुःख हुआ, मेरी दृष्टि-वृत्ति बदल गयी। तो यह भी मेरी अपवित्रता हो गयी क्योंकि दुःख, धोखेबाजी से बुद्धि दुविधा में आ जाती है। विश्वास अपने से या औरों से छूट जाता है।

भावना मेरी सदा शुद्ध श्रेष्ठ हो, विश्वास अटल हो। अच्छा ही होगा, हुआ ही पड़ा है। जो मीठे बाबा ने कहा, बच्ची हो जायेगा। अन्दर से और कोई आवाज़ आये ही नहीं। कैसे होगा? मुख के लड्डू थोड़े ही खाना है। अन्दर विश्वास का जो आवाज़ है, उसको मैं क्यों छोड़ूं। ड्रामा में हुआ पड़ा है, कराने वाला बाबा बैठा है। मुझे अपनी भावना को सच्चा रखना, मेरा काम है। जो होगा मैं राज़ी हूँ।

निश्चय में कभी खलल न पड़े, संशय न आये, स्वयं में, चाहे बाप में, चाहे ड्रामा में। ज़रा-सा भी संशय आया, तो आत्मा का जो भाग्य है, निश्चय के बल से विजय पाये, वह नहीं हो सकती। पूरे विश्व में सेवायें हो रही हैं, कई आत्मा नहीं कर रही है। परन्तु आत्मा का भाग्य है सिर्फ निश्चय रखा। भाग्य विधाता ने उसको निश्चय से निमित्त बना लिया। निश्चय का बल है सेवा का फल है। हमने क्या किया! सिर्फ पवित्रता हमारे संकल्प, वाणी, कर्म और सम्बन्ध में हो।

कहने से ज़्यादा करके दिखाओ

जैसे हर वर्ष मधुबन आते जाते रहते हैं, वैसे माया आती रहती है, कभी हार खाते, कभी विजय होती है। ऐसे अभी नहीं करना, जैसे दत्तात्रेय ने बहुत गुरू किये यानी उनसे गुण उठाया, ऐसे माया से गुण उठाके मायाजीत बनो। बाबा, हम सारा वर्ष मायाजीत रहेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा मधुबन में करके जाओ तो सदा विजयी रहेंगे। कहने से ज़्यादा करके दिखाने से बाबा खुश होगा, शक्ति भी देगा। रोज़ अमृतवेले बाबा से मिलन मनाके जो दृढ़ संकल्प किया है, वो याद करते कर्म योगी बन कर्मक्षेत्र में जाओ। फिर बीच-बीच में चेक भी

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

करते रहो कि जो स्वमान मैंने सुबह बाबा के सामने लिया था वो स्मृति में है? अगर स्वमान भूल गया है तो स्मृति में फिर से लाओ। अपने को चेक करना है कि मुझे बाबा याद है या नहीं? स्वमान याद है या नहीं? क्योंकि बाबा को याद करके अपने पापों को भस्म करने के लिए बाबा के ब्राह्मण बच्चे बने हैं, ना कि दूसरों को देखने के लिए। तो हम बी.के बने ही हैं कुछ परिवर्तन करने के लिए। बाबा कहते तुम बच्चे अपने को ठीक करेंगे तो योग में रहकर अन्य लोगों को भी शान्ति की शक्ति दे सकेंगे। तो जो सोचा है वो करना ही है। देखेंगे, सोचेंगे, करना तो है, कर तो रहा हूँ... यह भाषा यूज़ न करके, करना ही है ऐसे कहो। बाबा ने हम बच्चों में जो आश रखी है वो पूर्ण करना ही है, इसमें कांध हिलाओ। एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये, अगर व्यर्थ जायेगा तो अच्छा नहीं है। यहाँ आये हैं रिफ्रेश होने के लिए, भले कर्म भी करेंगे लेकिन कर्मयोगी होके करना है। सेकण्ड और श्वास कुछ भी व्यर्थ न जाये इतना अटेन्शन रखो तो समर्थ रहेंगे। यहाँ का यह अभ्यास वहाँ बहुत काम आयेगा।

अनुभव

मैंने जो परमात्मा के बारे में पढ़ा व सुना... वो इन नज़रों से देखा

अरी आँखों बंद नहीं होना आज...

गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले अंक में आपने पढ़ा कि जगदीश भाई जी को बाबा से कितना अथाह प्यार रहा। जो बाबा के बिना रह नहीं सकते। फिर आगे अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि

बाबा... साइलेंस लाइट, बाबा... क्या देखता हूँ बाबा आ गये हैं, बाबा आके सामने खड़े हो गए। मैंने लाइट ऑफ की नहीं थी क्योंकि मुझे नींद तो आ नहीं रही थी। लाइट ऑन ही थी। और उसमें बाबा आके खड़े हो गए, मुझे दृष्टि देने लगे। साक्षात्कार जैसे होता है, बाबा साकार में हैं लेकिन साकार में मुझे साकार भी दिखाई दे रहे हैं, लाइट के भी दिखाई दे रहे हैं। जिसको सेमी ट्रांस की आप स्टेज कह दीजिए। दोनों जैसे वो कहते हैं ना गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागू पाये। तो दोनों ही जैसे मुझे इकट्ठे दिखाई दे रहे हैं। अव्यक्त ब्रह्मा और ब्रह्मा। बाबा मुझे देख रहे हैं। मैं बाबा को देख

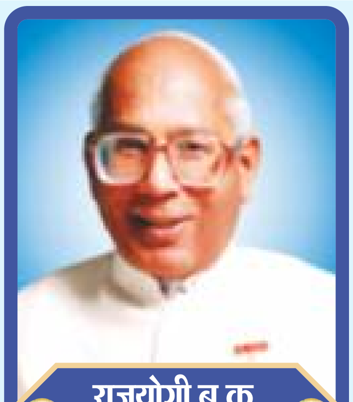
राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

'कच्चे धागे से बंधी हुई है सरकार मेरी' जिसको कहते हैं। धागा नहीं बंधा हुआ है लेकिन मेरी सरकार तो आ गई मेरे सामने ये मैंने देख लिया।

रहा हूँ टकटकी बांध के। 'अरी आँखों बंद नहीं होना आज' ये मुझे अच्छी तरह से निहार लेने दो। जी भरकर, देखता ही जाऊं, देखता ही जाऊं। वो गीत है ना तेरी याद का अमृत पीते हैं। बार-बार यही कहता तेरी याद का अमृत पीते हैं। तो मुझे भी यही था कि देखता ही रहूं, देखता ही रहूं। दिल कहता बाबा तुझे देखता ही रहूँ। तो मैं देखता ही रहा, देखता ही रहा।

बाबा मुझे दृष्टि देते ही रहे। मैं यहाँ होते हुए भी यहाँ नहीं था। और फिर बाबा बोले, मैं फिर बाद में थोड़ा नीचे उतरा तो सोचने लगा कि ये मैं लाइट का देख रहा हूँ या बाबा साकार में उनको देख रहा हूँ। अपने ऊपर ही सोचने लगा। बाबा को मेरा वायब्रेशन पहुंचा होगा, बाबा ने कहा बच्चे...बच्चे अब लेट जाओ, रेस्ट करो। सुबह मिलेंगे। अच्छा बाबा, लेट गया मैं। अब मैंने ये एक और अनुभव कर लिया कि योग का, याद का कनेक्शन क्या होता है। उसमें तार कोई नहीं बीच में लेकिन मैसेज पहुंचता है और वहाँ से भी मैसेज आता है। 'कच्चे धागे से बंधी हुई है सरकार मेरी' जिसको कहते हैं। धागा नहीं बंधा हुआ है लेकिन मेरी सरकार तो आ गई मेरे सामने ये मैंने देख लिया। ये सच्चा योग है और जैसे मैंने पहले बताया कि ये तो एक बहुत अपने प्रकार की कहानी है, दास्तान है उसको सुनायें तो बहुत टाइम की ज़रूरत है। उतना मैं नहीं कह पा रहा हूँ।

ये जो लकड़ी की सीढ़ी आती है, मूवमेंट लेडर, लाठी का बना हुआ है। उसपर चढ़कर हमने कई दफा बाबा को कील लगाते हुए देखा। अकेले हथौड़ी और कील लेकर ठोक रहे हैं। आशियाना बना रहे हैं। कुछ बच्चे आने वाले हैं। जगह है नहीं रहने की, उनके लिए वो बना रहे हैं लेकिन माफ कीजिए आज मैं देखता हूँ सेन्टर्स पर सम्पन्न बहनें-भाई या दूसरे जो धनाढ्य हैं, या और किसी तरह वाले सेवा करते होंगे, चुनी हुई सेवा करते हैं। जिसको हड्डी-हड्डी देने वाली सेवा कहते हैं वो नहीं देखने में आती। और मैंने बाबा को उस आयु में भी ये सारा कार्य करते देखा।

क्या फायदा यदि हम उन चर्चाओं को करेंगे और उससे रिज़ल्ट नहीं होगा, जीवन में कोई धारण नहीं करेंगे तो क्या फायदा! बाबा कहता है मैं चक्कर लगाता हूँ, बच्चों के कमरों में जाता हूँ देखता हूँ क्या कर रहे हैं! अरे विश्वास नहीं है, बाबा ऐसे ही कह रहे हैं! मैं वरदान देता हूँ उस टाइम। हाय-हाय तुम वरदान भी नहीं लेना चाहते! ऐसे बदनसीब हो! भगवान के घर में आके, उसके पास खाते-पीते रहते हो। उससे वरदान भी नहीं लेना चाहते, जाग भी नहीं सकते! मुरली भी नहीं सुन सकते! शिव बाबा परमधाम से आता है परमधाम से! उसकी डिसरिस्पेक्ट करते हो, इनसल्ट करते हो! कौन है वो, कितनी बड़ी अथॉरिटी है! अक्ल मारी तो नहीं गई। ये कितनी बदनसीबी है।

प्रयागराज-उ.प्र.। प्रयागराज माघ मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सिक्किम के राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य, ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. मनोरमा दीदी, इलाहाबाद हाई कोर्ट जज श्रीमती मंजू रानी चौहान, सुषमा बहन, गंगा समग्र के कोषाध्यक्ष चिंतामणि जी तथा भाजपा जिला कोषाध्यक्ष गंगा पार आशीष केसरवानी।

मोजमाबाद-राज.। राज्य के उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बेरवा के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आने पर उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना बहन।

सोनपुर-ओडिशा। प्रदीप कुमार अमात,पंचायती राज एवं पेयजल विभाग राज्यमंत्री को असुरगढ़ महोत्सव के दौरान ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. स्नेहा बहन।

आस्का-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'ब्लड डोनेशन कैम्प' के दौरान उपस्थित हैं विधायक बहन मंजुला स्वैन,आस्का, डॉ. मनु मरांडी,ब्लड बैंक,एमकेसीजी,ब्रह्मपुर, गायत्री दत्त नायक,मैनेजिंग डायरेक्टर,सुगर इंडस्ट्री,आस्का तथा ब्र.कु. प्रवाती बहन।

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित प्रभु समर्पण समारोह में अटलादरा सेवाकेन्द्र में सेवारत 6 पवित्र कुमारियों ने माता-पिता एवं परिवार जनों की उपस्थिति में स्वेच्छा से ईश्वरीय सेवार्थ अपना जीवन परमपिता परमात्मा शिव को समर्पित करने का श्रेष्ठ संकल्प लिया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, हर हाईनेस राजमाता शुभांगिनी राजे गायकवाड़, मणिनगर,अहमदाबाद सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. नेहा दीदी, मंगलवाड़ी सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. राज दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. हंसा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा दीदी, सह संचालिका ब्र.कु. पूनम दीदी, शैलेष सोट्टा,धारा सभ्य विधायक, पारुल बहन,केयर ग्रुप सीईओ, बिंदिया शाह,ट्यूब कंपनी, मितेश ठक्कर,जगदीश फूड प्रा.लि., डॉ. अनिल बिसेन,वीसी,आईटीएम वोकेशनल यूनिवर्सिटी सहित बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

हाथरस-उ.प्र.। नगर के प्रमुख समाजसेवियों की ओर से आयोजित श्री राम कथा में कथा वाचक जगतगुरु रामभद्राचार्य जी महाराज को ब्रह्माकुमारीज़ के जिला कार्यालय 'तपस्या धाम' सेवाकेन्द्र की ओर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. भावना बहन ने पटका व ईश्वरीय उपहार भेंट कर सम्मानित किया।

फर्रुखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। माघ मेला श्री रामनगरिया पांचालघाट में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'चरित्र निर्माण, ग्राम विकास, व्यसन मुक्ति तथा महिला सशक्तिकरण' प्रदर्शनी का रिबन काटकर शुभारंभ करते हुए महर्षि स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी महाराज,अध्यात्म साधना पीठाधीश्वर,नैमीषारण्य, श्रीश्री 1008 जयदेवानन्द सरस्वती योगीराज महाराज,महामण्डलेश्वर,बद्रीधाम एवं श्रीश्री 108 महन्त स्वामी ईश्वरदास जी महाराज,पांचालघाट। साथ हैं ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. सुरेश गोयल, ब्र.कु. रामनाथ भाई,माउण्ट आबू तथा अन्य।

उरई-जालौन(उ.प्र.)। इंडिया टुडे के संपादक सौरव द्विवेदी,लल्लनटॉप को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना दीदी। इस मौके पर ब्र.कु. सरिता बहन व ब्र.कु. बृजभान सिंह उपस्थित रहे।

सारंगपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में विश्व शांति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में निलेश वर्मा,नगर पालिका उपाध्यक्ष, राम बिलास यादव, महेश शर्मा, डॉ. आर्य, डॉ. जोशी, डॉ. शर्मा, महेश पाटीदार आदि अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उनके साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी बहन।

ये विधि सन्तुष्ट बना सकती

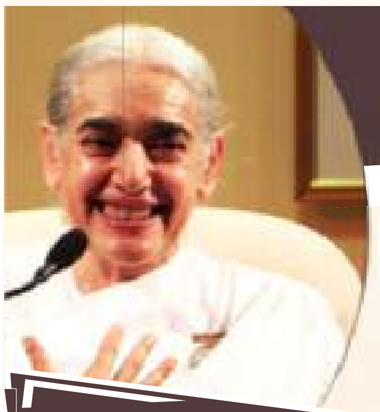

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

आप सोचो कि कोई भी मधुबन में आते हैं जब चक्कर लगाते हैं तो क्या देखते हैं? सब तरफ हर्षित चेहरे। तो इस कारण से ही वो ये कहने लगते हैं कि यहाँ तो बिल्कुल स्वर्ग है। मधुबन को तो वैसे भी हम शुरू में कहते थे स्वर्ग आश्रम। आजकल मैं ये कम सुनती हूँ परंतु बिल्कुल जो भी कोई नये आते हैं या पुराने भी परंतु उन्हों को हर तरफ हर्षित चेहरे नज़र आते हैं। तो वो कहने लगते हैं कि स्वर्ग तो यहाँ ही है। और फिर साथ-साथ आश्रम की पवित्रता की शक्ति जो है वो भी उन्हें महसूस होती। तो बाबा की प्रत्यक्षता पहले तो जो यहाँ आते हैं उन्हों के सामने हो। और जो भी बाबा के बच्चे जहाँ पर भी रहते हैं, जहाँ पर भी सेवा के लिए जाते हैं, जहाँ-जहाँ वो अपनी फरिश्ता स्थिति, संतुष्टता, हर्षितमुखता की स्थिति बनाकर रखते तो अवश्य बाहर वाले लोगों को भी लगता है कि ये कोई अलग ही व्यक्ति है। इन्हों के पास कोई विशेष खज़ाना है।

तो प्रश्न है कि हम कैसे ऐसे अपने जीवन को बनायें? तो पहली बात जो बाबा ने कहा कि संतुष्टमणि बनकर रहें। और ये तो प्रैक्टिकल देखा है कि कोई आत्मा के पास थोड़ा भी होगा तो भी कहेंगे कि सबकुछ है और कुछ नहीं चाहिए। आत्मा संतुष्ट है। और किसी के पास ज़्यादा भी होगा तो भी कहेंगे और चाहिए और चाहिए। तो संसार की हालत किस तरफ है? जितना आये कम ही पड़ता। समझते कि और भी चाहिए, और भी चाहिए। कभी लोभ के वश, कभी मोह के वश, कभी अहंकार के वश, लोभ में मुझे चाहिए, और अहंकार वश कि मेरे पास होगा सबकुछ तो सब मुझे देखकर मेरी वाह-वाह करेंगे। या मोह वश मुझे तो चाहिए अपने लिए परंतु अपने पोत्रे-धोत्रे सबके लिए चाहिए। तो ये सब जो बातें आती हैं यदि सचमुच हम आत्म स्मृति में हैं, बाबा की याद में हैं तो जो कुछ बाबा के पास खज़ाना है और बाबा तो सागर है। सागर ने बिल्कुल फाटक खोल कर रखा है और कहा है जितना आप लेने चाहो, जितना आप अपने में भरना चाहो, बाबा कुछ लिमिट नहीं रखते। बाबा बेहद का है और बेहद की छुट्टी देते हैं कि जितना जिसको चाहिए वो ले सकते हैं।

जितना-जितना हम बाबा से लेते जायें और साथ-साथ देते जायें उससे भी हमें जो दुआयें मिलती जाती हैं, हमारी खुशी बढ़ती जाती है, हमारे अन्दर शक्ति बढ़ती जाती है। हम नाम लेते हैं हमने बाबा के लिए परंतु वास्तविकता तो ये है कि वो भावनायें रखते हैं कि अनेक आत्मायें बाबा के नज़दीक आयें। परंतु वास्तविकता तो हमें बहुत-बहुत प्राप्ति हो जाती। इतना थोड़ा-सा भी बाबा के लिए करो तो शक्ति और खुशी किसे मिलती? बाबा तो सागर है, भरपूर है। परंतु शक्ति और खुशी हमें मिलती। तो हम सोचते हैं कि क्यों न और भी करें और भी करें। तो इस तरह से ऊपर से लेते जाओ और अन्य आत्माओं को देते जाओ।

सचमुच हम आत्म स्मृति में हैं, बाबा की याद में हैं तो जो कुछ बाबा के पास खज़ाना है और बाबा तो सागर है। सागर ने बिल्कुल फाटक खोल कर रखा है और कहा है जितना आप लेने चाहो, जितना आप अपने में भरना चाहो, बाबा कुछ लिमिट नहीं रखते।

दादी जानकी एक वारी कहती थीं कि मैं बहुत मनहूस हूँ। हम लोगों को आश्चर्य लगा क्योंकि दादी तो बहुत फ्राक दिल रही सदा ही। जब भंडारे में थोड़ा ही था तो वो दान करती थीं। अपना भोजन न करके बच्चों को खिला देती थीं। तो मुझे तो बचपन से अनुभव है दादी का, दादी तो बहुत बड़ी दिल वाली हैं। मैंने पूछा दादी आपका मतलब क्या? तो कहती जो बाबा ने मुझे दिया है, जिस आधार से मैं चल रही हूँ तो वो मैं अपने पास जमा रखती हूँ, उसको कभी वेस्ट नहीं करती हूँ। परंतु मैं बाबा को कहती हूँ कि जब और सामने आते हैं उन्हों को क्या देवें? बाबा कहता कि मैं देता जाऊंगा और तुम देती जाओ। आप लेती भी जाओ और देती भी जाओ। परंतु अपना जो शक्ति जमा की है, कोई भी बात में खर्च नहीं करो। वेस्ट नहीं करो। तो इसमें दादी कहती थीं कि मैं मनहूस हूँ। तो हम तो हँसते थे कि दादी का स्ट्रॉन्ग शब्द है परंतु भाव जब दादी एक्सप्लेन करती थीं हम समझ जाते थे। कहने का मतलब बाबा इतना दे रहा लेते जाओ और चैनल बनकर औरों तक पहुंचाते जाओ।

उस बीच में खुद को उसका परसेन्टेज फायदा हो जाता। तो संतुष्ट रहें तो बाबा से जितना हमें मिला है उतना हम उसको बाबा को थैंक्स देते रहें हर रोज़, सुबह-शाम बाबा को थैंक्स देते रहो क्यों? क्योंकि जितना हम बाबा को थैंक्स देते जाते हैं बाबा और भी आत्मा को भरपूर करता जाता। आप बच्चे को कुछ दो और वो एप्रीशिएट न करे तो आप नैक्स्ट टाइम सोचेंगे कि अभी उसको देवें या न देवें। परंतु बच्चे को बहुत खुशी हो, बहुत एप्रीसिएशन हो तो माँ-बाप भी कहेंगे कि देते जाओ, देते जाओ, बच्चा भी खुश होता है ना, देते जाओ। तो हमें जब बाबा दे रहा है और हमारी बुद्धि किसी और में फंसी हुई है कि ये चाहिए, वो चाहिए, चाहे कोई मनुष्य चाहिए, चाहे कोई और स्थूल चीज़ चाहिए तो उसमें फिर बाबा के साथ सीधी लाइन नहीं है, बाबा दे नहीं पाता। बाबा देना भी चाहे तो हम ले नहीं पाते। मतलब पहले तो बुद्धि की लाइन इतना क्लीन और क्लीयर रखें जो बाबा हमें दें सकें और हम अपने में समा सकें। फिर बिल्कुल निर्संकल्प होकर अन्य आत्माओं को बाबा का दिया हुआ खज़ाना हम देते रहें।

भोपाल-म.प्र.। गणतंत्र दिवस के अवसर पर राज्यपाल मंगू भाई पटेल को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी,ज़ोनल इंचार्ज,भोपाल ज़ोन,ब्रह्माकुमारीज़। साथ हैं ब्र.कु. जया बहन, ब्र.कु. सरिता बहन तथा ब्र.कु. दीपेन भाई।

नगांव-असम। बिहु उत्सव के उपलक्ष्य में रूपक शर्मा,विधायक,नगांव सदर को प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता बहन। साथ हैं ब्र.कु. सेवाली बहन व ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई।

भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के से.7 स्थित सेवाकेन्द्र के पीस ऑडिटोरियम में रशिया स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। कार्यक्रम में डिवाइन ग्रुप के बच्चों द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

फर्रुखाबाद-नेहरू रोड कन्नौज(उ.प्र.)। 'प्रभु प्राप्ति का सहज मार्ग : राजयोग' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए श्री श्री 108 स्वामी परसुराम। इस मौके पर स्वामी सोबरन सिंह, स्वामी मंगल सिंह, ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. रमा बहन आदि मौजूद रहे।

मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 55वें अव्यक्त स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सब इंस्पेक्टर संजय कुमार, नगर सभापति अरुण केसरी, जन सुराज के नगर अध्यक्ष रवि केसरी, औघड़दानी मंदिर न्यास बोर्ड के अध्यक्ष विनोद व्यास, वार्ड पार्षद मुन्ना जी, वार्ड पार्षद रघुवीर जी, वार्ड पार्षद रंजीत जी, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. इन्दू बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। बीएसएफ एसटीसी कैंपस में 750 रिक्रूट कॉन्स्टेबल्स को 'तनाव मुक्त जीवन के सूत्र' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् कमांडेंट ललित हुरमाडे को ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश एवं ब्र.कु. सुजाता बहन।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। नरसरावपेट में ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित 'भाग्य विधाता भवन' का ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी ने उद्घाटन किया। इस मौके पर एमएलए अंजनयेलु,चेयरमैन,शिव शक्ति ग्रुप्स व अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. शान्ता दीदी व लगभग 1200 ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

फर्रुखाबाद-जटवाड़ा जदीद(उ.प्र.)। अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में कला एवं साहित्य की अखिल भारतीय संस्था संस्कार भारती द्वारा नगर में आयोजित 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' यात्रा में शामिल होने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को विशेष आमंत्रित किया गया एवं ब्र.कु. ज्योति बहन,इटावा, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. सुधा बहन, ब्र.कु. सतोष बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. सतेंद्र भाई आदि का सम्मान किया गया। यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सजाई गई श्री राम दरबार, श्री लक्ष्मी नारायण, श्री राधा-श्री कृष्ण आदि की सुंदर झाँकी के द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश दिया गया। माउण्ट आबू से ब्र.कु. शोभा बहन ने विडियो कॉलिंग के द्वारा कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

माउण्ट आबू। गणतंत्र दिवस पर श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए ब्र.कु. अवतार भाई को सम्मानित करते हुए उपखंड अधिकारी गौरव रविन्द्र सालुंखे।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जानें....

दूसरों के मन की बात जानने की विधि

सम्पूर्ण अन्तवाहक फरिश्ता स्वरूप की ड्रेस पहन विचरण करें...

गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि किस-किस तरह से हमारी कर्मेन्द्रियां हमें धोखा देती हैं, उनकी चेकिंग हमें करनी है। बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण कैसे बन सकते। अब आगे पढ़ते हैं...

बाबा ने एक अव्यक्त मुरली में बहुत अच्छी बात बताई थी कि बाबा से सकाश लेना है, अगर देह अभिमान में होंगे तो साकाश नहीं ले सकते। उसके लिए मुझे भी अपने स्वरूप को कैसा बनाना होगा? बाबा के जैसा। तो सूक्ष्म स्वरूप जो है अन्तवाहक शरीर जिसे कहते हैं, अन्तर्वाहन बन जाये और फरिश्ता स्वरूप में वो अन्तर्वाहन बनते हुए जब यहाँ से हम उड़ते हैं तो यहाँ से सीधा फरिश्ते स्वरूप में नहीं पहुंच जाते हैं लेकिन जो सूक्ष्म शरीर है, जो कभी छाया के रूप में दिखाते हैं कि सूक्ष्म शरीर है तो वो हमारा अन्तर्वाहन है। उससे हम वतन में जाते हैं बाबा के पास और वहाँ हरेक की सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता ड्रेस है। उस फरिश्ते ड्रेस को धारण करते हैं।

जैसे साकार बाबा के समय बाबा जब पुरुषार्थ करते थे और जैसे ही ये राज़ खुला कि सूक्ष्म वतन में भी बाबा है और वो बाबा बहुत प्रकाशमान है तो बाबा को जानने की थी कि ऊपर वाला बाबा कैसा है! तो जब संदेशियों से पूछते थे तो वो कहती कि वो तो बहुत लाइट-लाइट वाला है। उस समय फरिश्ता ड्रेस का पता ही नहीं था। तो बाबा ने सोचा कि इसका मतलब वो मेरा सम्पूर्ण रूप है और ये पुरुषार्थी स्वरूप है। और ये स्वरूप उस स्वरूप में मर्ज हो जायेगा। ठीक इसी तरह कई बार संदेशियां जब ऊपर जाती हैं और बाबा कभी-कभी सभा दिखाते हैं और वो सभा जैसे पूरी फरिश्तों की सभा होती है।

एक बार हमने गुल्ज़ार दादी से पूछा कि दादी बाबा जब आपको ऊपर सभा दिखाते हैं तो हम दिखाई देते हैं? तो दादी ने कहा कि ये नहीं पता चलता है कि कौन है। क्योंकि हरेक का सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप होता है हमारे सामने जो सभा दिखाते हैं। तो उसमें फीचर्स हरेक के अलग हो जाते हैं। दिव्य फीचर्स हो जाते हैं। बहुत प्रकाशमान फीचर्स हो जाते हैं तो पहचान नहीं सकते। बहुत कोई-कोई को पहचान लेते हैं जैसे कोई दादियां पहचान में आ जाती हैं क्योंकि वो उस स्वरूप के नज़दीक पहुंच गये हैं तो जिस तरह साकार ब्रह्मा बाबा का नीचे पुरुषार्थी स्वरूप और ऊपर सम्पूर्ण स्वरूप और ये स्वरूप जाकर उसमें मर्ज हो जाता। उसके लिए बाबा ने पुरुषार्थ किया। अढ़ाई बजे से उठकर बाबा बैठकर उस लाइट माइट की स्थिति में बैठकर जैसे ये स्वरूप उस स्वरूप में मर्ज हो रहा है। ठीक इसी तरह अब अन्तिम पुरुषार्थ हमारा जो है वो यही होगा बाबा के जैसा कि जब भी हम बैठें तो यही अन्तर्वाहन,

> शुरू-शुरू के यज्ञ की हिस्ट्री में आप सबने सुना होगा कि जब यज्ञ में कोई अन्नय बच्चा बीमार होता था या बाबा के पास समाचार आता था तो उस समय बाबा अढ़ाई बजे से लेकर बच्चे को सकाश देते थे। लाइट की किरणें देते थे।

सूक्ष्म शरीर द्वारा हम वतन में जायें और उस सूक्ष्म शरीर को वहाँ सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता ड्रेस में मर्ज कर दें। वो धारण कर लें और अपने आपको उस दिव्य फीचर्स में देखें। जब उस सम्पूर्ण स्वरूप में होंगे तो बाबा के साथ नैन मुलाकात सहज हो जाती है। नैन मुलाकात करते हुए बाबा के मस्तक से जैसे सकाश हम ले रहे हैं ये फीलिंग आती है। तो ये पहला तरीका है सकाश को प्राप्त करने का।

दूसरा तरीका ये है, जो बाबा कहते हैं कभी कभी कोई ऐसी लहर होती है तो बाबा सकाश देता है। जैसे शुरू-शुरू के यज्ञ की हिस्ट्री में आप सबने सुना होगा कि जब यज्ञ में कोई अन्नय बच्चा बीमार होता था या बाबा के पास समाचार आता था खास करके जब हमने ये विशेष यज्ञ की हिस्ट्री में दादियों से सुना कि जब विश्वकिशोर भाऊ एडमिट थे बॉम्बे हॉस्पिटल में, या मम्मा को जब एडमिट किया था, ऑपरेशन था मम्मा का तो उस समय बाबा अढ़ाई बजे से लेकर बच्चे को सकाश दे रहे थे, लाइट की किरणें दे रहे थे। जिसको कहें जैसे पहले के समय में जब किसी को कैंसर हो तो उस जगह पर लाइट का फोकस देते थे। रेडियशन जिसको कहा जाये। ठीक इसी तरह बाबा भी पॉवरफुल सकाश देते थे तो जब ऐसी कोई लहर होती थी तो।

ठीक इसी तरह महसूस करना है कि अभी जैसे-जैसे अन्तिम समय की ओर आगे बढ़ रहे हैं तो नैचुरल है कि दो बातों का पेपर विशेष हमारे सामने आयेगा। ये हर ब्राह्मण को क्रॉस करना ही है। कौन से दो पेपर?

- क्रमशः

सिमराही-बिहार। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबीता बहन, ब्र.कु. वीना बहन, ब्र.कु. किशोर भाई तथा अन्य।

बिलासपुर-शुभम विहार(छ.ग.)। बेलतरा विधानसभा के नवनिर्वाचित विधायक सुशांत शुक्ला को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. सविता दीदी।

गाज़ियाबाद-मकनपुर(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में केक काटते हुए निगम पार्षद राधेश्याम त्यागी, अनुज त्यागी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुनीता दीदी,चांदनी चौक, राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी,गाज़ीपुर, ब्र.कु. नीलम बहन, ब्र.कु. ममता बहन व अन्य।

भिलाई-छ.ग.। भिलाई इस्पात संयत्र द्वारा जयंती स्टेडियम में गणतंत्र दिवस पर आयोजित परेड में ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग भवन सेवाकेन्द्र द्वारा स्वर्णिम भारत की दिव्य, अलौकिक झाँकी को प्रस्तुत किया गया। अंतर्दिशा परिसर से शिव ध्वज दिखाकर झाँकी को भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. प्राची बहन, ब्र.कु. स्नेहा बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने रवाना किया। झाँकी में ज्ञान की देवी हंस वाहिनी पर विराजित स्वर्णिम भारत लक्ष्मीनारायण का राज्य सुशोभित था। साथ ही राजयोग द्वारा विश्व में सुख-शांति को भी दर्शाया गया था। इस झाँकी ने प्रस्तुत सभी झाँकियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिसके पश्चात् भिलाई इस्पात संयत्र के एम.डी. अनिर्बन दास गुप्ता ने ब्र.कु. आशा दीदी को झाँकी के प्रथम की विजय ट्रॉफी प्रदान की। इस अवसर पर संयत्र के सभी एग्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर्स, अधिकारी एवं सीआईएसएफ प्रतिभा अग्रवाल सहित शहर के गणमान्य नागरिक, मीडिया सदस्य एवं छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर सभी राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों को योगभट्ठी कराने के लिए दिल्ली से ब्र.कु. पियूष भाई को आमंत्रित किये जाने पर शॉल पहनाकर व गुलदस्ता भेंट कर उनका स्वागत करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी।

दिल्ली-अली विहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान नई दिल्ली में कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं बायें से डॉ. अल्का,डिप्टी मेडिकल सुपरिंटेंडेंट, ब्र.कु. पूनम बहन, डॉ. रिचा,माइक्रोबायोलॉजिस्ट, ब्र.कु. राजबाला बहन एवं डॉ. हिना।

ग्वालियर-म.प्र.। अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के पुराना हाईकोर्ट स्थित सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'अपने राम सबके राम' कार्यक्रम में श्री राम, श्री लक्ष्मण, श्री सीता और श्री हनुमान की सुंदर चैतन्य झाँकी सजाई गई। कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, डॉ. ब्र.कु. गुरचरण भाई, ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. महिमा बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राजगीर-नालंदा(बिहार)। पद्मश्री अवॉर्ड से सम्मानित वीरायतन की संस्थापक एवं जैन समाज में प्रतिष्ठित आचार्य पद से सम्मानित पहली जैन साध्वी परम पूज्य चंदना जी महाराज को उनके 88वें जन्मदिवस के अवसर पर ब्र.कु. ज्योति बहन ने उन्हें बधाई दी एवं ईश्वरीय सौगात भेंट किया।

गंज-बासौदा-म.प्र.। 'सकारात्मक युवा विकसित भारत का आधार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में देवर्ष गुप्ता,विद्यार्थी परिषद अध्यक्ष गंज बासौदा व अशोक अग्रवाल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. रुक्मणी बहन व ब्र.कु. अनु बहन।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर आयोजित परिचर्चा 'सशक्त युवा सशक्त भारत' को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. विमला दीदी। मंचासीन हैं सीए स्टूडेंट एसोसिएशन जबलपुर के नयन जैन, महाकौशल बधिर संघ युवा प्रभाग की गंगा पाठक, सेंट एलायसियस कॉलेज कॉमर्स फोरम की प्रेसिडेंट अदिति सिंह, इंजीनियरिंग छात्रा आरुषि विश्वकर्मा व ब्र.कु. बहन।

राजगढ़-म.प्र.। जिलाधीश(कलेक्टर) दीक्षित जी को नव वर्ष की बधाई, नव वर्ष का कैलेंडर व प्रसाद देने के पश्चात् आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा बहन व ब्र.कु. दीपिका बहन।

झालावाड़-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. रमेश भाई,माउण्ट आबू, डॉ. राम कल्याण मीणा, डॉ. कुलदीप गुर्जर, लव कुमार शर्मा, पूनम शुरूगी, डॉ. अशोक कंवर शेखावत, अतुल देव यादव, कुलदीप मेहर, केशरी लाल वर्मा, ब्र.कु. नेहा बहन, सोमनाथ भाई सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

रिकोंग पीओ-किन्नौर(हि.प्र.)। अनिरुद्ध सिंह,ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री,हि.प्र. को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. सरस्वती बहन व ब्र.कु. कल्पना बहन।

रोहतक-हरियाणा। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में रोहतक ओल्ड आईटीआई ग्राउंड में सरकार की ओर से आयोजित कार्यक्रम में सांसद डॉ. अरविंद शर्मा, बिज़नेसमैन राजेश जैन, पूर्व सहकारिता मंत्री मनीष ग्रोवर, मेयर मनमोहन गोयल आदि उपस्थित रहे। ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन एवं ब्र.कु. वंदना बहन को भी आमंत्रित किया गया एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ के शीला बाईपास सेवाकेन्द्र पर भी बड़ी संख्या में भाई-बहनों द्वारा मोमबत्ती जलाकर श्री राम प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया गया।

भवानीगढ़-पंजाब। परमपूज्य श्री श्री 1008 बालयोगिनी महामण्डलेश्वर संत शिरोमणि साध्वी श्री करुणागिरी जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजेंद्र बहन।

आगरा-आर्ट गैलरी म्यूज़ियम(उ.प्र.)। आरसीएम ग्रुप द्वारा बिग ड्रीम हॉल में आयोजित महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किये जाने पर डॉ. ब्र.कु. रमेश तेवानी,भोपाल, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. माला बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। छत्रपति शिवाजी महाराज के 350वें राज्याभिषेक वर्ष एवं भारत के 75वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में भारत भारती संघटना एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय एकात्मता शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस शोभायात्रा में स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित झाँकी का मुख्य उद्देश्य 'सर्व आत्माओं के परमपिता' रहा। जिसका शुभारंभ एवं समापन परशुराम भाऊ कॉलेज में हुआ। झाँकी में राजयोगी ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. रोहिणी बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, विनय पत्राळे,राष्ट्रीय अध्यक्ष,भाभासं, कृष्ण कुमार गोयल,प्रदेश अध्यक्ष,भाभासं, अचल जैन,अध्यक्ष,भाभासं पुणे, कैप्टन भूषण गोखले, प्रोग्रेसिव एजुकेशन सोसायटी के डायरेक्टर श्रीमती ज्योत्सना एकबोटे, ऑफिसर्स करियर एकेडमी के संचालक दुबे सर, शहर के विभिन्न धार्मिक, शैक्षणिक संस्थानों के प्रतिनिधियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

पपीते के फायदे जान इसे खाने से खुद को रोक नहीं पायेंगे...!!!

पपीता एक ऐसा फल है जिसे भारत सहित दुनिया भर में खूब खाया जाता है। खासतौर पर फिटनेस फ्रीक्स तो इसके दीवाने हैं, क्योंकि इसका स्वाद भी बहुत खास होता है। स्वाद और पोषण से भरपूर पपीता कई ऐसे महत्त्वपूर्ण पोषक तत्वों का भंडार है, जो हमारे पूरे शरीर के लिए फायदेमंद है। आपको बता दें कि पपीते में कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन बी9, पोटैशियम और मैग्नीशियम एक बेहतरीन स्रोत है। इसके साथ ही इसमें कैल्शियम, विटामिन बी1, विटामिन बी3, विटामिन ई और विटामिन के जैसे पोषक पाए जाते हैं। जो शरीर को कई लाभ पहुंचाने में मदद कर सकते हैं तो चलिए जानते हैं पपीता खाने का सही समय और फायदे...

पपीता खाने के फायदे

1. पाचन को मजबूत करने के लिए

अगर आप पाचन सम्बंधी समस्या से परेशान हैं तो आप अपनी डाइट में पपीते को शामिल कर सकते हैं। पपीते में मौजूद पपेन नामक एंजाइम प्रोटीन को आसानी से पचने में मदद कर सकता है।

2. बालों को हेल्दी रखने के लिए

स्कैल्प और हेयर टिशू को ग्रो करने के लिए आप पपीते का सेवन कर सकते हैं। पपीते में विटामिन ए मौजूद होता है और विटामिन ए सीबम को प्रोड्यूस करने वाले आवश्यक पोषक तत्वों में से एक है। सीबम बालों की नमी को बनाए रखने में मददगार है।

3. हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए

अगर आप भी कमज़ोर हड्डियों की समस्या से परेशान हैं तो रोज़ाना सुबह पपीते का सेवन करें। पपीते में भरपूर मात्रा में विटामिन के मौजूद होता है। जो कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ावा देने का काम करता है। जिससे हड्डियों को मजबूत बना सकते हैं।

4. स्किन को हेल्दी रखने के लिए

पपीता स्किन को फ्री रेडिकल से होने वाले डैमेज से बचाव करने में मददगार माना जाता है। प्रोडक्ट इतना ही नहीं ये रिंकल, फाइनलाइन जैसी समस्याओं से बचाने में भी मदद कर सकता है।

5. कमज़ोरी दूर करने में करता मदद

अगर लंबी बीमारी के कारण या पौष्टिकता की कमी के वजह से कमज़ोरी महसूस हो रही है तो पपीता का इस तरह से सेवन करने पर लाभ मिलता है। पपीता के कच्चे फलों का साग बनाकर सेवन करने से अग्नि मांद्य तथा कमजोरी में लाभ होता है। कहने का मतलब यह है कि पपीता खाने से कमज़ोरी दूर होने में मदद मिलती है।

6. आँखों की रोशनी बढ़ाने में सहायक

पपीते में विटामिन ए और सी पाए जाने के कारण यह आँखों के लिए भी लाभकारी होता है।

7. पीरियड्स के दौरान होने वाले दर्द से दिलाये राहत

पीरियड्स के दौरान होने वाला दर्द वात दोष के अधिक बढ़ने के कारण होता है। पपीते में वात शामक गुण पाए जाने के कारण यह इसमें राहत देता है।

8. गठिया के दर्द से दिलाये राहत

गठिया का रोग वात दोष के बढ़ने के कारण होता है। पपीते में पाए जाने वाले वात शामक गुण इस रोग के लक्षणों को कम करने में भी मदद करता है।

पपीता का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए

बीमारी के लिए पपीता के सेवन और इस्तेमाल का तरीका पहले ही बताया गया है। अगर आप किसी खास बीमारी के इलाज के लिए पपीता का उपयोग कर रहे हैं तो आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह ज़रूर लें।

प्रो टिप्स

पपीते का सुबह खाली पेट सेवन सबसे अच्छा माना जाता है। लेकिन अगर आप रात के समय इसे खाते हैं तो सीमित मात्रा में ही इसका सेवन करें।

नवसारी-गुज.। 'योग तपस्या अनुभूति भट्ठी' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए अफ्रीका से आईं ब्र.कु. प्रतिभा बहन, ब्र.कु. गीता बहन व अन्य।

पुणे-बाणेर(महा.)। सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता रितेश देशमुख को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी बहन। साथ हैं ब्र.कु. सरिता बहन व डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

बूंदी-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रामा कृष्णा सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित 'कंज़्यूमर अवेयरनेस प्रोग्राम' को सम्बोधित करते हुए माउण्ट आबू रेडियो मधुबन के ब्र.कु. रमेश भाई ने सभी को साइबर क्राइम के प्रति जागरुक किया। इस दौरान स्कूल के प्रधानाचार्य कमलेश नागर, स्कूल के अध्यापकगण तथा विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। साथ ही स्थानीय ब्र.कु. भाई-बहनें भी मौजूद रहे।

मुक्ताई नगर-महा.। महिलाओं के लिए आयोजित हल्दी कुमकुम के कार्यक्रम में परमात्म परिचय देते हुए ब्र.कु. सुषमा बहन।

कोई बद्दुआ दे तो क्या करें...

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आप परमात्मा के बच्चे हैं, दाता के बच्चे, दाता हो ना! तो दाता का काम क्या होता है? देना। तो सबसे अच्छी चीज़ है दुआयें देना। कैसा भी व्यक्ति हो लेकिन है तो आपका भाई या बहन ना! हम एक परमात्मा के बच्चे भाई-बहन हैं। एक ही माँ के पेट से निकले दो बच्चे भी एक-दूसरे को दुआ नहीं देते हैं, इसका एक ही रिज़न है दाता के बजाय लेने वाले बन गये। रिश्तों में सिर्फ यही रिज़न है, देने वाले। एनर्जी देने वाले हर रिश्ते में आज हम लेने वाले। हमें सबसे चाहिए... चाहिए। अगर बद्दुआ वाले को आप दुआ देंगे, वो दे या न दें लेकिन आप दुआ देंगे तो दुःख क्यों होगा! जब उसको दुआ दी तो खुद की स्थिति क्या हो जायेगी? अगर यह हम न करें तो उसकी निगेटिव एनर्जी हमें दुःखी कर देगी। मैं उसके लिए निगेटिव सोचता जाऊं, सोचता जाऊं, वो ज़हर हम खुद ही पी रहे हैं। जो चिंतन कर रहा है वो खुद ही पी रहा है। ज्ञान का मंथन करेंगे, अच्छी-अच्छी बातों का मंथन करेंगे वो भी खुद ही पीने को मिलेगा। दूसरों की कमज़ोरियों का मंथन करेंगे वो भी हमारी ही प्रोपर्टी बन जायेगी। इसलिए बाबा ने कहा अगर बद्दुआ देने वाले को भी आप दुआ देंगे, वो दे न दे लेकिन आप दुआ देंगे तो दुःख क्यों होगा? ये तो अपनी प्रोटेक्शन हो गई ना!

बाबा आप बच्चों को एक वरदान देता है। वरदान याद रखेंगे तो सदा खुश रहेंगे, ब्लेसिंग। तो परमात्मा एक वरदान देता है। वरदान देता है कि अगर कोई आपको दुःख दे तो भी आप दुःख लेना नहीं। वो दे लेकिन आप नहीं लेना। क्योंकि देने वाले ने तो दे दिया लेकिन लेने वाले तो आप हो ना! लेकिन बाबा ने कहा लेने वाले तो आप हो, देने वाला लेने वाला नहीं है, देने वाला सिर्फ देने वाला है। लेने वाले तो आप हो ना! अगर वो बुरी चीज़ देता है, दुःख देता है, अशान्ति देता है, तो बुरी चीज़ है ना! आपको दुःख पसंद है? नहीं पसंद है? ये तो बुरी चीज़ हो गई, तो बुरी चीज़ ली जाती है क्या? तो कोई आपको बुरी चीज़ दे तो आप लेंगे क्या?

कोई आपको ऐसी गिफ्ट दे जो अच्छी चीज़ नहीं है, नहीं लेंगे ना! लेकिन लेते क्यों हो फिर? अगर दुःख ले लेते हो तो दुःखी कौन होता है? उन्होंने निगेटिव एनर्जी भेजी अगर आपने अटेन्शन नहीं रखा तो आपने मेरी निगेटिव एनर्जी रिसीव कर ली। आप दुआयें नहीं दे रहे थे तो मेरी निगेटिव आपको पहुंच जायेगी। फिर दुःखी कौन होता है? आप होते हैं या वो होता है? लेने वाला ज़्यादा दुःखी होता है ना! अगर अभी से दुःख लेंगे नहीं तो आपका आधा दुःख तो दूर हो जायेगा। लेंगे ही नहीं। और आप दुःख की बजाय उसको सुख देंगे अगर, तो दुआयें मिलेंगी। तो सुखी भी रहेंगे और दुआओं का खज़ाना भी भरपूर होता जायेगा। हर आत्मा से कैसी भी हो आप दुआयें लो। शुभ भावना, शुभ कामना रखो।

> **बाबा ने कहा लेने वाले तो आप हो, देने वाला लेने वाला नहीं है, देने वाला सिर्फ देने वाला है। लेने वाले तो आप हो ना! अगर वो बुरी चीज़ देता है, दुःख देता है, अशान्ति देता है, तो बुरी चीज़ है ना! तो कोई आपको बुरी चीज़ दे तो आप लेंगे क्या?**

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। जिले में नशामुक्ति अभियान 'निजात' के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शासकीय कृषि महाविद्यालय,बिलासपुर के सभागार में आयोजित भव्य कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के निजात अभियान से जुड़े बिलासपुर टिकरापारा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. गायत्री बहन, ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. राकेश, ब्र.कु. संदीप, ब्र.कु. भूषण आदि सदस्यों को मंच पर प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उप मुख्यमंत्री अरुण साव, बिलासपुर विश्वविद्यालय के कुलपति ए.डी.एन. बाजपेयी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह, बेलतरा विधायक सुशांत शुक्ला, कृषि महाविद्यालय के डीन राजकुमार तिवारी, डीएसपी अर्चना झा सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रमुख उपस्थित रहे।

वारंगल-तेलंगाना। नवनिर्वाचित फॉरेस्ट,एनवायरमेंट एंड एंडोमेंट स्टेट मिनिस्टर श्रीमती कोंडा सुरेखा गरु को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. श्रीलता बहन तथा अन्य।

राजनांदगांव-छ.ग.। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ग्राम कोपेहीड में आयोजित महोत्सव में उपस्थित जन मानस को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रभा बहन। साथ हैं ब्र.कु. खेमिन बहन एवं मानस सम्मेलन की सभी महिलाएं।

मुम्बई-घाटकोपर। ब्रह्माकुमारीज़ योग भवन,घाटकोपर सबज़ोन द्वारा गृहस्थ में रहते 25 वर्षों से अधिक समय से राजयोगी पवित्र जीवन जीने वाले ब्र.कु. भाई-बहनों के 'तपोत्सव-तपस्वी जीवन की रजत जयंती' समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में घाटकोपर सबज़ोन से सम्बंधित पूरे महाराष्ट्र से 300 से भी अधिक ब्र.कु. भाई-बहनों को सम्मानित किया गया तथा एक भव्य-दिव्य मेगा रैली भी निकाली गई। इस समारोह में बौध भिक्षुक एवं भीकू संघ के अध्यक्ष भदंत डॉ. राहुल बोधि,महाथेरो, परमार्थ निकेतन,ऋषिकेश के स्वामी चिदानंद सरस्वती जी, प्रवीण छेड़ा,भाजपा सचिव,मुम्बई, राम कदम,एमएलए,घाटकोपर पश्चिम क्षेत्र, अर्जुन मुद्दा,फिल्म एंड म्यूज़िक इवेंट्स ऑर्गनाइज़र, सीए दिशा मुद्दा,प्ले बैक सिंगर, राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. नलिनी दीदी,निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन, राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अति. निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन, ब्र.कु. विष्णुप्रिया बहन,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु. निकुंज भाई,लोकप्रिय स्तंभकार एवं ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग के राष्ट्रीय समन्वयक सहित अन्य विशिष्ट लोग मौजूद रहे।

उकलाना मंडी-हरियाणा। नवनियुक्त भाजपा हिसार जिलाध्यक्ष बहन डॉ. आशा खेदड को सेवाकेन्द्र में आने पर ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक भाई,माउण्ट आबू। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन तथा समाजसेवी विनय जी।

नदबई-भरतपुर(राज.)। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त स्मृति दिवस पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए नगर पालिका अध्यक्ष हरवती सिनसिनवार, ब्र.कु. संतोष बहन, ब्र.कु. हीरा बहन, ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा ग्राम बरकोंहा में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत किसानों में जागृति लाने और उन्हें अपनी भारतीय कृषि पद्धति से जोड़े रखने के उद्देश्य से 'समृद्ध किसान देश की शान' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन, भागवत कथा वाचक व्यास रूद्र देव जी महाराज, ग्राम सरपंच प्रीतम यादव, ब्र.कु. पंकज, ब्र.कु. अल्लू, ब्र.कु. रामपाल, ब्र.कु. राम, ब्र.कु. ज्ञानू, ब्र.कु. पवन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित ग्रामवासी उपस्थित रहे।

दिल्ली-मजलिस पार्क(खेराकलां)। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में स्थानीय राम मंदिर से रैली निकालते हुए ब्र.कु. सुभ्रा बहन तथा अन्य।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये
Website: www.omshantimedia.org

परमात्म ऊर्जा

अच्छा, एक मात्रा के अन्तर का शब्द है- शिव के बजाए शव को देखते हैं। शव को देखने से शिव को भूल जाते हैं। शिव शब्द बदलकर विष बन जाता है। विष, विकारों की विष। एक मात्रा के अन्तर से उल्टा बन जाने से विष भर जाता है। उसका फिर परिणाम भी ऐसा ही निकलता है। उल्टे हो गये तो परिणाम भी ज़रूर उल्टा ही निकलेगा। इसलिए कब भी शव को न देखो अर्थात् इस देह को न देखो। इनको देखने से अथवा शरीर के भान में रहने से लॉ ब्रेक होता है। अगर इस लॉ में अपने आपको सदा कायम रखो कि शव को नहीं देखना है; शिव को देखना है तो कब भी कोई बात में हार नहीं होगी, माया वार नहीं करेगी। जब माया वार करती है तो हार होती है।

अगर माया वार ही नहीं करेगी तो हार कैसे होगी? तो अपने आपको बाप के ऊपर हर संकल्प में बलिहार बनाओ तो कब हार नहीं होगी। संकल्प में भी अगर बाप के ऊपर बलिहार नहीं हो, तो संकल्प कर्म में आकर हार खिला देते हैं। इसलिए अगर लॉ मेकर अपने को समझते हो तो कभी भी इस लॉ को ब्रेक नहीं करना। चेक करो- यह जो संकल्प उठा वह बाप के ऊपर बलिहार होने योग्य है? कोई भी श्रेष्ठ देवताएं होते हैं, उनको कभी भी कोई भेंट चढ़ाते हैं तो देवताओं के योग्य भेंट चढ़ाते हैं, ऐसे वैसे नहीं चढ़ाते। तो हर संकल्प बाप के ऊपर अर्थात् बाप के कर्त्तव्य के ऊपर बलिहार जाना है। यह चेक करो- जैसे ऊंच ते ऊंच बाप है वैसे ही संकल्प भी ऊंच हैं जो भेंट चढ़ावें? अगर व्यर्थ संकल्प, विकल्प हैं तो बाप के ऊपर बलि चढ़ा नहीं सकते, बाप स्वीकार कर नहीं सकते। आजकल शक्तियों और देवियों का भोजन होता है तो उसमें भी शुद्धिपूर्वक भोग चढ़ाते हैं। अगर उसमें कोई अशुद्धि होती है तो देवी भी स्वीकार नहीं करती है, फिर वह भक्तों को महसूसता आती है कि देवी ने हमारी भेंट स्वीकार नहीं की। तो आप भी श्रेष्ठ आत्मायें हो। शुद्धि पूर्वक भेंट नहीं है तो आप भी स्वीकार नहीं करते हो।

ऊंच ते ऊंचे बाप के आगे क्या भेंट चढ़ानी है वह तो समझ सकते हो। हर संकल्प में श्रेष्ठता भरते जाओ, हर संकल्प बाप और बाप के कर्त्तव्य में भेंट चढ़ाते जाओ। फिर कब भी हार नहीं खा सकेंगे।

विदिशा ए-33 मुखर्जी नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा साईं कॉलेज ऑफ नर्सिंग पैरामेडिकल साइंसेज़ में 'सकारात्मक युवा विकसित भारत का आधार' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. नंदिनी बहन, ब्र.कु. अनु बहन, कॉलेज के डायरेक्टर संतोष सिंह बघेल, प्रिंसिपल अमित प्रताप सिंह परिहार, शिक्षकगण व विद्यार्थीगण।

कथा सरिता

बूढ़ी माँ और बेटा

यह कहानी है बेंगलुरू में रहने वाले रमेश की। रमेश अपने परिवार के साथ बैंगलोर में रहा करता था। परिवार में रमेश की माँ और रमेश की पत्नी तथा दो बच्चे भी रहा करते थे।

रमेश की माँ सावित्री बहुत ही बूढ़ी हो चुकी थी और अपने पति के गुजर जाने के बाद बहुत अकेली थी। रमेश एक अमीर आदमी था पर वह अपनी माँ के इस बुढ़ापे की उम्र में उनकी ज़रूरतों को समझ पाने में असमर्थ था।

वह भौतिक ज़रूरतें पूरी कर पाता था मगर इमोशनल स्पोर्ट नहीं दे पाता था, जिसकी उसकी माँ को इस उम्र में बहुत ज़रूरत थी। रमेश का घर चार मंज़िल का था। उसने अपनी माता के लिए तीसरे मंज़िल में कमरा तैयार कर रखा था। उस कमरे में सारी सुख-सुविधाएं थी। सभी सुख-सुविधा होने के बावजूद भी उसकी माँ हमेशा परेशान और मायूस रहा करती थी। वह अकेली रहती थी उसके साथ बात करने वाला कोई नहीं था, वह अपने परिवार का साथ चाहती थी।

पर यह बात रमेश को समझ नहीं आ रही थी। रमेश और उसकी पत्नी लीला को यह लगता था कि हम तो अपनी बूढ़ी माँ को सारी सुख-सुविधाएं उपलब्ध करवाते हैं। किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है फिर भी यह सासू माँ हमेशा ही नाराज़, परेशान और ना खुश क्यों रहती है, अक्सर इस बुढ़ापे में वह हमसे क्या चाहती हैं? ऐसा सावित्री की बहू लीला ने सोचा। एक दिन सावित्री ने अपने बेटे रमेश से ज़िद की कि उसका बिस्तर पहली मंज़िल में लगवा दे।

माँ के कई दफा कहने पर रमेश ने उनका बिस्तर नीचे मंज़िल में लगवा दिया। अब सावित्री नीचे मंज़िल में खुश रहने लगी। उसके स्वभाव में बेहद परिवर्तन आने लगा। यह देख रमेश हैरान हुआ कि ऊपर तीसरी मंज़िल में भी उन्हें हर एक सुख-सुविधा मैंने दे रखी थी। फिर भी वह हमेशा नाखुश और डिप्रेस्ड रहती थी। पर यह ऐसा क्या हुआ जो अब माँ हंसने लगी है, खुश रहने लगी है। दरअसल सावित्री की खुशी का राज़ पहली मंज़िल में अपने पोते-पोतियों को आते-जाते देख और उनके साथ खेल पाने की थी।

यह खुशी उसे तीसरी मंज़िल में रहकर नहीं मिलती थी क्योंकि वहाँ बच्चों का और परिवार का आना-जाना बहुत कम था और वो ना ही इतनी सीढ़ियां चढ़-उतर सकती थी। अब सावित्री के पोते-पोतियां भी उसके साथ खेलते थे। उनके साथ खेलते-खेलते अब वह धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगी और सावित्री के चेहरे पर पहले जैसी खुशी वापस आने लगी। वह अपने बच्चों के लिए कभी पकोड़ियां तो कभी मालपुए बनाया करती थी।

अब बच्चे भी अपनी दादी के साथ खुश रहने लगे। यह सब देख रमेश आश्चर्यचकित रह गया कि माँ की तबीयत में इतना सुधार आखिर कैसे? जो यह महंगी-मंहगी दवाईयां न कर पाई बल्कि परिवार के साथ थोड़ा-सा समय बिताने पर ही उनकी सेहत में बहुत ज़्यादा सुधार दिखने लगा। अब वह यह बात समझ गया कि बुढ़ापे में हमें भौतिक सुख-सुविधाओं से ज़्यादा अपनों का प्यार और अपने परिवार के साथ की ज़रूरत होती है।

बूढ़े और बच्चे एक समान होते हैं उन्हें बच्चों की तरह प्यार और देखभाल की आवश्यकता होती है। रमेश को अपने किए पर पछतावा हुआ, उसे घमंड था कि वह तो अपनी माँ को हर एक सुख-सुविधा देता है। पर इस भौतिक सुविधाओं के दिखावे के चक्कर में वह अपनी माँ को असली सुख-सुविधा देना भूल गया था जो था अपने माता-पिता का बुढ़ापे में हाथ थामना जैसे उन्होंने बचपन में हमारा थामा था।

सीहोर-म.प्र.। केंद्रीय कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू ने सम्बोधित किया। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. पंचशिला बहन, ब्र.कु. संतोष बहन, जेल सहायक अधीक्षिका ज्योति तिवारी, जेल के कार्यवाहक प्रमुख मुख्य प्रहरी मोहम्मद अजहर, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. महेश भाई, ब्र.कु. आकाश भाई आदि उपस्थित रहे।

बरौली-गोपालगंज(बिहार)। सुप्रसिद्ध अभिनेता पंकज त्रिपाठी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. पुतुल बहन।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा टाटा मोटर्स आनंद ग्रुप में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य वक्ता ऑस्ट्रेलिया मेलबर्न से आईं ब्र.कु. अनन्या बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रीमा बहन, छतरपुर आनंद ग्रुप के जीएम उत्कर्ष कुशवाहा, एचआर अंकित अग्रवाल तथा समस्त कर्मचारीगण।

नागठाणे-सातारा(महा.)। गणतंत्र दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत, मेरा महाराष्ट्र व्यसनमुक्त महाराष्ट्र' अभियान के तहत चित्र रथ युक्त व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान सातारा के पालकमंत्री तथा महाराष्ट्र के कायदा सुव्यवस्था मंत्री शंभूराजे देसाई, जिलाधिकारी जितेंद्र डुडी, पुलिस अधीक्षक समीर शेख, मुख्य कार्यकारी अधिकारी ज्ञानेश्वर खिलारी सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

सरिया-छ.ग.। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र में राम दरबार की चैतन्य झाँकी सजाई गई। इस कार्यक्रम में ब्र.कु. सुनयना बहन, नगर पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल स्वर्णकार, ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

असली खुशी की पहचान

हम हमेशा ऐसी चीज़ों के पीछे भागते हैं जो हमें तत्काल खुशी दे। इसी वजह से असली खुशी हमसे काफी पीछे छूट जाती है। इस नये साल में आप ऐसी चीज़ों के पीछे न भागकर सही की पहचान करें।

व्यक्ति खुशी को ढूंढने व उसे प्राप्त करने के लिए दिन-रात दौड़ता है। कई बार त्वरित खुशी के लिए शॉर्ट कट रास्ता अपनाता है। ये कर लूं, ये खरीद लूं, ये पहन लूं तो मैं खुश होऊंगा। इसी आपाधापी में वो असली खुशी से वंचित रहता है।

तारीफ सुनने की चाह

जैसे आपने नये कपड़े पहने और दोस्त ने आपकी तारीफ कर दी तो आप कोशिश करेंगे कि अगली बार भी तारीफ हो। अगर नहीं होगी तो आपको बुरा लगेगा। इसलिए इस बात पर ध्यान दें कि आप जो कर रहे हैं उसमें खुद अपनी तारीफ कर पा रहे हैं या नहीं?

सीखने के लिए शॉर्ट कट लेना

हम कोशिश करते हैं कि किसी भी काम को कम समय में ही सीख लें। ऐसी आदतों से हम न तो उस काम को सही तरह से सीख पाते हैं, न ही उसमें बेहतरी हासिल कर पाते हैं। भले समय अधिक लगे, पर हमेशा सिलसिलेवार तरीके से सीखने की कोशिश करें। सीखने का भी सही तरीका अपनायें। नहीं तो वो सीख हमें संतुष्टता नहीं देगी।

किसी से अधिक प्रभावित होना

किसी से बहुत अधिक प्रभावित होने पर, उसका हमेशा सही रहना ही हमें खुशी देता है। इसके कारण हमें उसकी बुराइयां दिखनी बंद हो जाती हैं। कोई अच्छा काम कर रहा है तो उसे स्वीकारें, पर ये भी न भूलें कि आपके विचार भी आपके लिए अहम हैं। उसका प्रभाव आपकी योग्यता को पंगु बना सकता है। आपकी रचनात्मक शक्ति को क्षीण कर सकता है। प्रभाव का दबाव आपकी एबिलिटी को प्रभावित करेगा।

रीवा-म.प्र.। भारत की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला,करनाल हरियाणा की पुण्य स्मृति में शहर में आयोजित विशिष्ट कार्यक्रम में उनकी एक आदमकद प्रतिमा का अनावरण मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला द्वारा किया गया। साथ ही रीवा के पॉलिटेक्निक कॉलेज का नामकरण भी कल्पना चावला की स्मृति में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रह्माकुमारीज़ रीवा के कला एवं संस्कृति प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर भोपाल ज़ोन राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने की। इस मौके पर आदर्श विज्ञान महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. आरती सक्सेना, कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रीवा की प्राचार्य डॉ. विभा श्रीवास्तव, नगर निगम रीवा के स्पीकर वेंकटेश पांडे, भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी रीवा के अध्यक्ष डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी, डॉ. मुजीब खान, शिक्षा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. पटेल, मध्य प्रदेश शासन के रिटा. प्रमुख अभियंता आर.के. सिंह आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे तथा बड़ी संख्या में रीवा क्षेत्र के समाजसेवी, कलाकार और कॉलेज के विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। 'अनिश्चितताओं के समय में निश्चिंतता' विषय पर आयोजित विशेष कार्यक्रम को ब्रह्माकुमारीज़ की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम में डॉ. विजय शाह,भाजपा प्रेसिडेंट, चिराग बारोट,डिप्टी मेयर, पारुल दवे,सीईओ,केयर ग्रुप, तारक पटेल,एफजीआई प्रेसिडेंट, गीता गोरडिया,एमडी.ज्वेल ब्रशेस प्रा.लि., डॉ. राकेश राजपुरोहित,रेलवे डीजी, शांतिलाल भाई कवा,एमडी,उर्मी एन्टरप्राइज़ तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित मणिनगर,अहमदाबाद सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. नेहा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें व शहर के लोग उपस्थित रहे।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। भारत के 75वें गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सामाजिक न्याय विभाग से ए.आई. खान, मुख्य लिपिक आर.के. सोनी, कलाकार अजय खरे, कैलाश खरे,सियाराम नगर व सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा दीदी सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे। इस मौके पर आपसी एकता एवं भाईचारे को दर्शाते हुए भारत माता एवं विभिन्न धर्मों की झाँकी सजाई गई तथा बाल कलाकारों द्वारा देशभक्ति गीतों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई।

राँची-झारखंड। 'समाधान परक मीडिया के लिए आध्यात्मिकता एक चाबी' विषय पर आयोजित मीडिया सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए अभिषेक जी,नक्षत्र न्यूज़, दिवाकर कुमार,समाचार सम्पादक,राँची दूरदर्शन, साकेत पुरी,वरीय समाचार सम्पादक,प्रभात खबर, राजयोगी ब्र.कु. सुशांत भाई,एमजेएमसी,ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू के राष्ट्रीय प्रवक्ता व मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक, ब्र.कु. निर्मला दीदी, अशोक झा,सम्पादक,पीएसए न्यूज़ तथा अन्य।

भोपाल-म.प्र.। केंद्रीय कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन, सहायक जेलर हरीश आर्य, जेल उपाधीक्षक सरोज मिश्रा तथा अन्य जेल स्टाफ सहित ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. सुखेन्द्र भाई, ब्र.कु. अविनाश भाई आदि मौजूद रहे।

रतलाम-गौरव नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्योदय भवन सेवाकेन्द्र पर गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने से पूर्व उपस्थित हैं अनीता कटारिया,महिला मोर्चा प्रदेश कार्य समिति सदस्य, झमक भरगट,सर्राफा एसोसिएशन अध्यक्ष, विशाल डागी,सर्राफा एसोसिएशन उपाध्यक्ष, संजय छाजेड़,सर्राफा एसोसिएशन कोषाध्यक्ष, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. आरती बहन, भारत सिंह चौहान तथा अन्य भाई-बहनें।

दिल्ली-नरेला। राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बच्चियों में जीवन मूल्यों के प्रति जागृति दिलाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता ब्र.कु. ओम प्रकाश भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन, ब्र.कु. निरंजन भाई, ब्र.कु. योगेश्वरी बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्व भवन सेवाकेन्द्र में 75वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी तथा अन्य भाई-बहनें।

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य संस्कार भवन सेवाकेन्द्र में 75वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में प्रतिष्ठित अस्थि विशेषज्ञ डॉ. हंसराज सिंह, पार्षद आशीष राज वैद्य, ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. वंदना बहन, टेक सिंह पटेल मासाब,दमोह, श्रीमती रमा चौबे, सेवानिवृत्त एएसआई सुरेश ठाकुर, डॉ. शुभ लक्ष्मी सिंघई जिला चिकित्सालय नरसिंहपुर, भगवती ठाकुर सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

कामठी-रनाला(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 75वें गणतंत्र दिवस(अमृत महोत्सव) के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् सलामी देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन, संयुक्त धर्म संसद महाराष्ट्र के प्रदेश संयोजक राजेश शर्मा, महादेव घाट योगासन ध्यान केन्द्र के अध्यक्ष एवं सचिव महेन्द्र वाही, मोंटू भुटानी तथा अन्य भाई-बहनें।

मुल्तानपुरा(म.प्र.)। राष्ट्रीय बालिका दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शासकीय बालिका छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में आध्यात्मिक चर्चा कर सभी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज़ ब्यावरा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, छात्रावास की अधीक्षक जिज्ञासा कराड़ा, निवानिया स्कूल के एच.एम. सुशील यादव, ब्र.कु. देव बहन तथा अन्य शिक्षकगण।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञानदीप भवन सेवाकेन्द्र में 'संस्कारों की धरोहर बेटियां' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रतिमा बहन, महिला मोर्चा अध्यक्ष शैलजा मिश्रा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन तथा अन्य भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में बालिकाएं उपस्थित रहीं।

परमात्म यज्ञ(कार्य) की सम्भाल

हम सभी जब किसी मंदिर में जाते हैं तो भी कुछ न कुछ उस भंडारी में डालते हैं, उसके बाद प्रसाद खाते हैं, वापस आते हैं। अब किसने देखा कि आपने क्या डाला, लेकिन ऐसा मन करता है कि नहीं ऐसे ही मुझे यहां से कुछ नहीं लेना है, कुछ न कुछ करना है। कहावत भी है, 'देयर इज़ नो फ्री लंच इन द वर्ल्ड', माना इस दुनिया में कुछ भी फ्री नहीं मिलता, कुछ न कुछ उसका एवजा आपको देना पड़ता है। इसलिए परमात्मा का जो इतना विशाल कार्य चल रहा है, उसमें इतनी जो भी वस्तुएं या अन्य सामग्री आती है वो परमात्मा के उन अनन्य बच्चों के धन से आती है जो सिर्फ और सिर्फ मेहनत से कमाते हैं और इसके लिए ही सबकुछ करते हैं। तो इसमें हम सभी की क्या भूमिका होनी चाहिए? जो भी भंडारा है या भंडारी है, दोनों के प्रति हम सबकी ज़िम्मेवारी बढ़ जाती है।

ये तो ज़ाहिर ही है कि कुछ लोग पूरी तरह से परमात्मा के कार्य में अपने जीवन को लगा देते हैं, वो तो बाहर नहीं जाते हैं धन कमाने, वो सिर्फ और सिर्फ सम्भालने के लिए हैं। और कुछ अपने समय अनुसार सेवा देते हैं। आपको ये ज्ञात हो कि जब कोई चीज़ हमको फ्री में मिलती है तो उसकी वैल्यू कुछ दिन में हम समझ नहीं पाते। लौकिक दुनिया में हर दिन अपने खर्चे को बचाने के लिए लोग मोलभाव करते हैं, कहते कि आज सब्जी इतनी महंगी हो गई, दाल इतनी महंगी हो गई, कैसे खाएं! लेकिन यहां तो सबकुछ सामने पड़ा है। इतनी वैरायटी दुनिया में हमें कहीं भी नहीं मिलती जितनी इस यज्ञ में हमें देखने को मिलती है। ईश्वर का समझकर उसको उपयोग में लाने से, परमात्मा की याद में उसे खाने से वो अन्न प्रसाद के रूप में हमारे तन को लगता है। लेकिन कई बार लोग ये भी कहते हैं कि आप तो भगवान के घर का खाते हैं फिर भी आप बीमार रहते हैं! उनका ये प्रश्न लाज़मी है। हम परमात्मा के घर में रहकर उसे खाने के बाद भी शायद इसलिए बीमार पड़ते हैं क्योंकि उसको खाने का भाव सिर्फ खाने का है, जीने का नहीं। यहां जीने का अर्थ है कि मैं तो सिर्फ शरीर को चलाने हेतु भोजन का उपयोग करता हूँ ना कि हबच से, लोभ से।

परमात्मा के यज्ञ से जो भी हम उपयोग करते हैं तो उसका भी हिसाब तो होता ही है ना! अगर सही तरह से नहीं किया तो उसका हमारे ऊपर बोझ चढ़ता है, लेकिन वो तभी चढ़ता है जब हम उसको सिर्फ और सिर्फ यूज़ करते हैं। परमात्मा के कार्य में सौ प्रतिशत सहयोग देने का अर्थ यही है कि हम सभी ट्रस्टी हैं। उसने हमें दिया है, हम सिर्फ सम्भाल रहे हैं। लेकिन अगर इस यज्ञ से कुछ भी उठा रहे हैं, किसी भी चीज़ को देखकर हमारे अंदर लोभ-लालच पैदा हो रहा है तो हम ट्रस्टी नहीं कहे जायेंगे। इसलिए सम्भल के यहां की एक-एक चीज़ का इस्तेमाल करें।

जब हम लोभवश बहुत सारी चीज़ें खाते भी हैं और उसे उठाकर घर भी ले जाते हैं थोड़ा तो वो अन्न या फल स्वास्थ्यकर नहीं होगा। क्योंकि भाव दूसरा है ना, इसलिए वो अन्न हमारे शरीर में बीमारियां पैदा करेगा। वो अन्न लगेगा नहीं तन को। चलो हम धन कमाते नहीं हैं, लेकिन और कार्यों में तन, मन का सहयोग तो दे सकते हैं ना उसे बचाकर, बचत करके। जैसे बिजली कहीं एक्स्ट्रा जल रही है तो उसको बंद कर दिया, कहीं नल से पानी ऐसे ही बह रहा है तो उसे बंद कर दिया, गैस वेस्ट न हो। कोई भी अप्लायंस(उपकरण) को चलता छोड़ दिया है तो उसको ठीक रखना, कोई चीज़ खराब पड़ी है उसको ठीक करवाना। परमात्मा हम सबको शिक्षा देते हैं कि खान-पान न तो बहुत रॉयल हो और न ही बहुत नीचे का हो, बीच का हो। इसीलिए इतना शुद्ध बना हुआ, परमात्मा की याद में बना भोजन खाने पर भी उसके प्रति हमारा भाव सिर्फ खाने का होने के कारण हमारा शरीर उस प्रकार कार्य नहीं करता जैसा करना चाहिए। बड़ी सूक्ष्म धारणा है कि अगर हमें कुछ मिल रहा है तो उसको लेने से पहले उसका दस गुणा हमको देना पड़ेगा।

जैसे दुनिया में भी अगर कोई किसी को दस लाख रुपये सालाना दे रहा है तो उससे डेढ़-दो करोड़ का काम भी ले रहा है। ऐसे ही नहीं कोई सैलरी दे देता है। इसलिए इस कार्य में सुबह की दिनचर्या से लेकर शाम तक जो कुछ भी हमने स्थूल रूप से, जो शरीर से सम्बंधित चीज़ें हैं उससे और मन-बुद्धि से लोभ-लालच से जो कर्म किये होते हैं उससे ही हमारी सैलरी बनती है। इसलिए मसला सिर्फ इतना है कि यज्ञ ज़रूर हम सभी का है लेकिन जब तक उसकी सही रीति से सम्भाल न हो तब तक हम सिर्फ उसको यूज़ कर रहे हैं। क्योंकि इन सबके पीछे अनेक योगी आत्माओं के द्वारा दिया गया पैसा है, उसका हमारे ऊपर बोझ चढ़ता है, लेकिन वो तभी चढ़ता है जब हम उसको सिर्फ और सिर्फ यूज़ करते हैं। परमात्मा के कार्य में सौ प्रतिशत सहयोग देने का अर्थ यही है कि हम सभी ट्रस्टी हैं। उसने हमें दिया है, हम सिर्फ सम्भाल रहे हैं। लेकिन अगर इस यज्ञ से कुछ भी उठा रहे हैं, किसी भी चीज़ को देखकर हमारे अंदर लोभ-लालच पैदा हो रहा है तो हम ट्रस्टी नहीं कहे जायेंगे। इसलिए सम्भल के यहां की एक-एक चीज़ का इस्तेमाल करें। यही परमात्मा के कार्य में हमारा सौ प्रतिशत योगदान होगा।

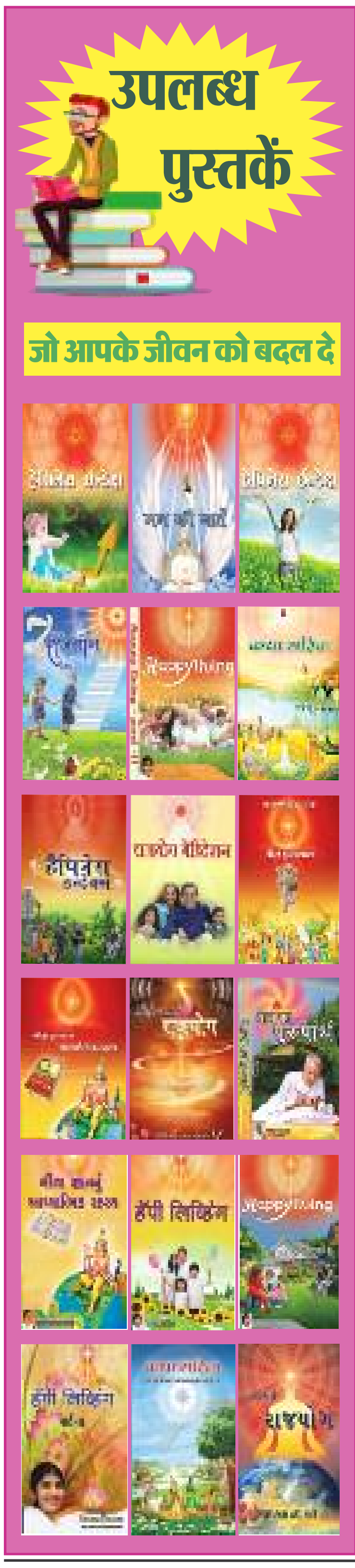

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मृत्यु के बाद की स्थिति वास्तव में है क्या?

उत्तर : आत्मा एक देह रूपी वस्त्र उतारकर दूसरा धारण कर लेती है। मृत्यु हुई, आत्मा गर्भ में प्रवेश करेगी। गर्भ में जो बच्चा है वो चार-पाँच मास का हो गया होगा तब आत्मा उसमें प्रवेश करेगी। और प्रवेश करने के बाद ब्रेन का और अंगों का तेजी से विकास हो जायेगा। लेकिन आत्मा यहाँ से अपने सारे संस्कार और कर्म साथ लेकर जाती है। क्योंकि आत्मा जब देह छोड़ती है तो उसका सूक्ष्म शरीर भी उसके साथ चलता है। सूक्ष्म शरीर भी बिल्कुल ऐसे ही होता है जैसे ये शरीर होता है। बस वो लाइट का होता है। मन, बुद्धि, संस्कार कर्मों का सारा इफेक्ट उसमें रहता है। उसके साथ आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।

तो जैसे-जैसे जिसके कर्म और वैसा शरीर का निर्माण, वैसा ब्रेन का निर्माण, अनेक चीज़ें हैं मनुष्यों के अन्दर आप देख सकते हैं। हरेक का चेहरा अलग, आँखें अलग, नाक अलग, कोई बहुत ही स्ट्रॉन्ग, कोई पतला-दुबला, कोई जन्म से ही बीमार तो जिसके बहुत पाप कर्म हैं उसकी ऐसी स्थिति होती है, ये जानने योग्य विषय है। मान लो किसी ने पाँच-सात साल बहुत भयानक रूप से कैंसर से पीड़ित रहकर देह छोड़ा, ये सब आजकल बहुत हो रहे हैं। और कैंसर की याद में ही उसका देह छूट गया। तो कैंसर के संकल्प उसके मन में थे, किसी भी तरह के उल्टे-सीधे मुझे कैंसर था, मेरे कैसे पाप थे, हाय ये ठीक नहीं हो रहा, मेरा क्या होगा तो मन उन सबको साथ लेकर नई देह में प्रवेश करता है। अभी नये बच्चे में इसलिए वो सब वायरस कहें या वो सब संस्कार कहें जो भी मेडिकल वाले इसको जो भी नाम दें बच्चे के शरीर में वहीं से पड़ जाते हैं। उनके वायब्रेशन्स के कारण। तो जैसे वो बड़ा होगा छोटी आयु में ही कैंसर का रोग उसमें दिखाई देगा।

आजकल तो देखो ऐसे केस आ रहे हैं। दो साल के बच्चे, पाँच साल के बच्चे कैंसर से पीड़ित, डायबिटीज से पीड़ित, हार्ट पेशेन्ट, हार्ट में छेद, किडनी दोनों कमज़ोर, लीवर बहुत वीक, ब्रेन बहुत डल, ये सब स्थिति आ रही है तो ये सब पूर्व जन्मों की जो स्थिति रही है मनुष्य की, जो कर्म रहे हैं, जो संस्कार रहे हैं, गहरी छाप गर्भ से ही उस देह पर पड़ जाती है। उसके साथ बच्चे का जन्म होता है। जैसे मेडिकल में हेरीडिटरी(वंशानुगत) कहते हैं ना कि दादा-दादी से रोग आये हैं। पूर्व जन्मों से भी रोग आते हैं इसलिए कुछ लोग जो इस चीज़ के विशेषज्ञ हैं पूर्व जन्मों में जाकर उनको उस रोग से मुक्त कर देते हैं। ये भी एक बहुत बड़ी विद्या है। तो इस तरह अलग-अलग जगह पर, अलग-अलग परिवारों में कोई धनवान के घर, कोई गरीब के घर, कोई जन्मते ही बीमार, कोई बहुत स्वस्थ, कोई जन्म से ही बहुत बुद्धिमान, कोई की बुद्धि डल, कोई बहुत योग्य तो कोई बहुत कम योग्य। वो सब संस्कार, बुद्धि, मन के वायब्रेशन्स लेकर आत्मा दूसरे देह में प्रवेश करती है। उसी तरह का उसका नया जन्म होता है।

ये भी जानने योग्य है कि आत्मा कभी मेल शरीर में प्रवेश करती है तो कभी फीमेल शरीर में। आत्मा ना मेल है ना फीमेल। फिर भी इसको शास्त्रों में पुरूष कहा गया है। मेल रूप में इसको देखा गया। परंतु ये जो जेन्डर हैं, लिंग हैं इन दोनों से परे है। वो आत्मा एक जन्म नर के रूप में, दूसरा जन्म नारी के रूप में। और कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है दो जन्म एक साथ एक ही योनि में हो जायें। दो बार पुरूष बन जायें, या दो बार स्त्री बन जायें, इसके ज़्यादा नहीं। अन्यथा हर बार चेंज होता रहेगा। कभी-कभी ऐसा होता है कि पुरूष के संस्कार अति प्रबल हैं तो दूसरा जन्म भी पुरूष के रूप में हो जायेगा। बस ये अगले जन्म में स्थिति बनती है।

प्रश्न : मरने के बाद क्या होता ये किसने देखा? क्या मरने के बाद किसी ने आकर बताया कि हम स्वर्ग में गये थे, नर्क में गये थे। ये तो लोग कल्पना मानते हैं और ये मानते हैं कि डराने के लिए ये बात कही गई थी। इस विषय पर आप क्या टिप्पणी करेंगे जो लोग ऐसा मानते हैं कि स्वर्ग, नर्क जैसी कोई चीज़ ही नहीं होती?

उत्तर : हाँ स्वर्ग, नर्क की तो बात नहीं लेकिन मैंने भी एक बुक मेरे पास आई कि 'मृत्यु के बाद क्या' तो जो लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये थे वो पाँच मिनट बाद वापिस आ गये। माना देह फिर से जीवित हो गयी। इसमें वन्डरफुल बात ये थी कि सबके अनुभव एक जैसे थे कि वो कहाँ से पास हुए, कौन उन्हें मिला, क्या बातचीत हुई और कैसे वो आ गये नीचे। वो सब उन्होंने सुनाये लगभग एक जैसे। तो कल्पना तो नहीं माना जा सकता। उसमें कई अच्छे-अच्छे लोग भी थे, डॉक्टर्स थे, प्रोफेसर्स थे, ऐसे-ऐसे लोगों के अनुभव थे। 100 लोगों के अनुभव छपे हुए हैं। दूसरी हमारे भारत में भी जहाँ-तहाँ एक घटना होती रहती है। कि कुछ बच्चे दो साल के, तीन साल के वो बोलना सीखते हैं ना तो वो अपने पूर्व जन्म का बखान करने लगते हैं। अरे मेरी माँ कहाँ है, उसका नाम ये है, मुझे वहाँ ले चलो। मैं यहाँ कहाँ आ गया, मेरा तो घर वहाँ है। और जब लोग वहाँ जाके पता करते हैं तो वो एकदम सही निकलता है। सच निकलता है। उसमें संशय की कोई गुंजाइश ही नहीं। अनेक वैज्ञानिक वहाँ पहुंचे, मनोवैज्ञानिक वहाँ पहुंचे। सबने इसकी जाँच की। तो पुनर्जन्म तो एक सत्यता है। वास्तव में ये कल्पनायें नहीं हैं, पुनर्जन्म होता है।

मृत्यु के बाद किसने देखा है, देखा है हम सबने। हम उसे भूल गये हैं। मृत्यु सबकी हुई है। सब उस अनुभव से गुज़रे हैं लेकिन इस संसार के वातावरण में, यहाँ के वायब्रेशन्स में, यहाँ की मोह-ममता में मनुष्य को सबकुछ विस्मृत होता रहता है। और विस्मृत होना ही कल्याणकारी है। सबकुछ याद रहे तो मनुष्य पागल ही हो जायेगा। इसलिए भूलने में बड़ा भला है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

आपके संकल्पों में है शक्ति

संकल्पों द्वारा तन और मन का उपचार

मानसिक रोगों के साथ-साथ आजकल शारीरिक रोग भी मनुष्य को काफी कष्ट दे रहे हैं। कैंसर, हार्ट डिजिज, दमा, ये भी जीवन को नष्ट कर रहा है। डिप्रेशन तो बहुत बुरी चीज़ है ही। रात को नींद न आना, बहुत बड़ी सज़ा होती है। जिनको रात को नींद नहीं आती उनको मैं एक छोटी-सी राय देता हूँ, पुण्यों का खाता बढ़ाओ। सोने से पहले मैं एक महान आत्मा हूँ 108 बार लिखें। आप देखेंगे कि आठ-दस दिन के बाद आपको लिखते-लिखते ही नींद आने लगेगी। मैं एक महान आत्मा हूँ ये आपको समझ लेना है। **हम भगवान के बच्चे हैं। उससे महान, उससे ऊंचाई वाला तो कोई होता नहीं। हम उसकी संतान हैं। उसने हमें सम्बोधित करते हुए वचन कहे- बच्चे तुम भी साधारण नहीं हो, बहुत महान हो। हमारे स्वमान को जगाया, हमारी चेतना सो गई थी। हम अपने को पापी, नीच, कपटी, दुराचारी, व्यसनी मान बैठे। उसने याद दिलाया कि तुम बहुत पवित्र आत्मा हो।** तुम महान आत्मायें हो, तुम इस सृष्टि का श्रृंगार हो। तुम इस संसार के लिए लाइट हाउस हो। जगा स्वमान...। अगर आप रात को ये लिखेंगे तो ब्रेन को बहुत पीसफुल एनर्जी जायेगी और ब्रेन शांत होगा। क्योंकि नींद न आने का एक बहुत बड़ा कारण पूर्व जन्मों में किए पाप कर्म हैं। वो ब्रेन को हाइपर एक्टिव कर रहे हैं ये बात सभी को ख्याल में ले आनी है। दवाईयों से उसको शांत नहीं किया जा सकता।

एक तो ऐसा व्यक्ति हमने देखा जो 25 गोलियां खाता था रात को। मैंने उसे कहा कि तुम तो पागल हो जाओगे छोड़ो इन्हें, दस दिन में ही उनकी गोलियां छुड़ाई। एक पर लाया और फिर वो भी छुड़ाई। मैं एक महान आत्मा हूँ...108 बार लिखेंगे। लेकिन ये ध्यान रखना है कि व्हाट्सएप्प पर, फोन पर आपको नहीं रहना है, लिखते ही सो जाना है। बहुत सारे युवक रात को एक बजे तक, दो बजे तक लगे रहते हैं। भिन्न-भिन्न चीज़ें देखते हैं, गंदी-गंदी मूविज़ देखते हैं। उनको फिर नींद अच्छी नहीं आती, वही चलता रहता है और फिर ऐसे लोगों का डिप्रेशन में आना, मानसिक रोगों का शिकार होना बिल्कुल निश्चित है। इसलिए मात-पिता अपने बच्चों को सावधान करें, क्योंकि युवक इन बातों को कम समझते हैं। वो तो आनंद समझते हैं क्योंकि नींद एक साउण्ड स्लीप बहुत गहरी नींद मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। आप इन चीज़ों से बचेंगे। सोने के बाद हो सकता है बीच में आपकी नींद फिर खुल जाये, मैं महान आत्मा हूँ, भगवान की संतान हूँ ये रिपीट करते रहना। आपको अच्छी नींद आने लगेगी। नींद का सुख भी सुखों में से एक बहुत बड़ा सुख है। जिसको नींद नहीं आती उनसे पूछो उनका हाल क्या होता है? ब्रेन की शक्ति नष्ट होने लगती है। मन चिड़चिड़ा होने लगता है, इरिटेशन बढ़ जाता है, खुशी समाप्त हो जाती है, धन सम्पदा उसे बेकार लगती है। लम्बा समय न आये तो मनुष्य सुसाइड करने की सोचने लगता है। ये सोचना बहुत बड़ी भूल होगी। क्योंकि इसके बाद आत्मा भटकजाती है और वो पश्चाताप ही कररहतहै।

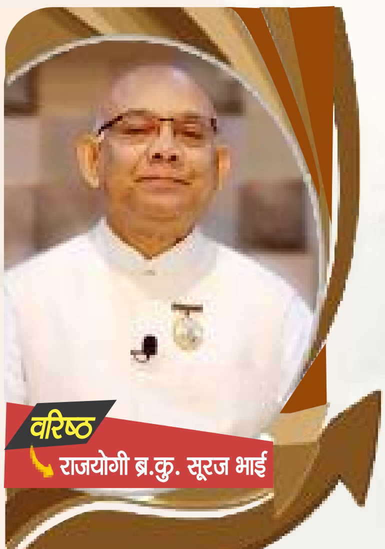

कई-कई साल वो अंतरिक्ष में भूखे, प्यासे, ब्लाइंड, तड़पती हुई, वो अपने कर्मों को याद करती हुई भटकती रहती है। इसलिए ये गलती कोई न करे। अपने को सुधारना है, ईश्वरीय ज्ञान लो आप, आपके जीवन में खुशी लौट आयेगी। क्योंकि जहाँ खुशी बहुत है वहाँ अनेक रोग समाप्त हो जाते हैं। आपके परिवार में किसी को कैंसर हो गया, या कोई और बुरी बीमारी हो गई, आप कोशिश करो उसको हल्का करने की। सबकुछ ठीक हो जायेगा। माहौल को भारी न होने दें। ये परिवार का महा कर्त्तव्य है।

मान लो उनसे अब काम नहीं होता तो टॉन्टिंग न करते रहें। काम नहीं करता, काम नहीं करती, खाली पड़ी फ्रूट खा रही है। बोझ बन गई है हमारे जीवन पर। ये जो मनुष्य की आदत है ना बुरा बोलने की, ये पाप है। ये सूक्ष्म विकर्म होता है। आपका कर्त्तव्य है उसे सहयोग देना, भले ही उसका व्यवहार आपसे कैसा भी रहा हो, आप ये कामना न करो कि ये मर जाये तो हम सुखी हो जायेंगे। किसी के मरने से कोई सुखी नहीं होता, सुखी तो मनुष्य अपने श्रेष्ठ कर्मों से ही होता है। तो घर में माहौल को हल्का करें, खुशी का माहौल रखें, अच्छे म्यूज़िक चलायें। अच्छे गीत बजायें। जिसमें मनुष्य का मन डांस करने लगे और आप अच्छी तरह जान लें, विश्वासपूर्वक जान लें अगर मनुष्य प्रसन्न रहना सीख ले तो अनेक रोग समाप्त हो जायेंगे। ब्लॉकेज भी खत्म हो जायेंगी।

एक बात और मुझे कहनी है जो मैं कई बार रिपीट करना चाहूंगा। रात को जब मनुष्य सोता है तो उसके सब्कॉन्शियस माइंड में, उसके अंतर्मन में सोने के समय बहुत ज़्यादा हीलिंग पॉवर होती है। रोगों को ठीक करने की अत्यधिक शक्ति होती है। सोने से पहले यदि आप अपने मन को संकल्प दें, कमांड दे दें मान लो आपको कैंसर है, मेरा कैंसर बिल्कुल ठीक हो गया है। खुले मन से सोचें, एक बूझे हुए मन से नहीं। आपको हाई बीपी है, मेरा बीपी नॉर्मल हो गया है, मेरी हार्ट डिजीज समाप्त हो गई है, मेरा लीवर परफेक्ट हो गया है, किसी को माइग्रेन है, मेरा माइग्रेन बिल्कुल ठीक हो गया है, पाँच-सात बार करके फिर सोयें। अगर कोई मनुष्य इन्हीं संकल्पों में सो जाये कि मैं बहुत हेल्दी हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, मैं निरोग हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मैं बहुत भाग्यवान हूँ तो एक-एक रात उसके लिए कमाल की रात होगी। उसके रोगों को ठीक करने वाली होगी।

मैं आप सभी का ध्यान दिला रहा हूँ क्योंकि रोग बढ़ते जा रहे हैं इसका कारण पहले ही कह आये हैं हम आपको कि ये कल्प का अन्त आ गया है और इसमें सभी के कर्मों का हिसाब-किताब हो रहा है। बहुत तेज ये मशीनरी हो जायेगी। सभी के कर्म चुक्तू होने लगेंगे तो इसमें घबराना नहीं है। हमने कर्ज़ लिया है उसको प्यार से दे दें। तो अपने घर के माहौल को खुशनुमा बनायें। पॉज़िटिव संकल्प करें, उन चीज़ों से बचें। उन पाप कर्मों से बचें, अपनी लाइफ को सात्विक बना दें। हमारी शुभकामनायें हैं कि आप बहुत गहरी नींद लें। आपकी रात सुखभरी हो, स्वप्नों से मुक्त हो, और आप निरोग होकर श्रेष्ठ कार्य इस संसार के लिए करें। याद रखेंगे कि हमें इस संसार को कुछ देते रहना है, और देते-देते ही इस संसार से विदाई लेनी है।

नई दिल्ली-आर.के. पुरम। 'सहज गीता' पुस्तक के उद्घाटन समारोह में मीनाक्षी लेखी,विदेशी मामलों एवं संस्कृति राज्य मंत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनिता बहन व ब्र.कु. ज्योति बहन।

ब्यावरा-म.प्र.। नगर के नवनिर्वाचित राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार नारायण सिंह पंवार को शुभकामनाएं देने के पश्चात् शॉल पहनाकर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. देव बहन तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। सांसद जनार्दन मिश्रा को नवयुग सतयुग का कैलेंडर तथा ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमलता बहन व ब्र.कु. प्रकाश भाई। साथ हैं भाजपा के उपाध्यक्ष राजेंद्र त्रिपाठी तथा अन्य।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में हाथरस में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी के तहत विनोद विहार कॉलोनी में सभासद दिनेश उपाध्याय के द्वारा कलश यात्रा एवं रामकथा का आयोजन किया गया। जिसमें शामिल होकर ब्र.कु. शान्ता बहन एवं ब्र.कु. मीना बहन ने सभी को ईश्वरीय संदेश दिया। इसके साथ ही प्रसिद्ध नवग्रह हनुमान मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में महंत पुजारी दिनेश चन्द्र शर्मा ने ब्रह्माकुमारी बहनों को आमंत्रित किया। वहां भी ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा परमात्म संदेश दिया गया। एक अन्य आयोजन नगर की नगरपालिका अध्यक्ष श्वेता चौधरी एवं पूर्व सांसद राजेश दिवाकर द्वारा किया गया, जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. श्वेता बहन व ब्र.कु. दुर्गेश बहन की सहभागिता रही।

विदिशा-म.प्र.। सुप्रसिद्ध कथा वाचक अंशुमन महाराज,वृंदावन धाम को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन एवं ब्र.कु. रुक्मिणी बहन।

जालोर-राज.। चार दिवसीय आध्यात्मिक गीता ज्ञान महोत्सव 'खुशहाल जीवन का आधार-श्रीमद् भगवद्गीता का सार' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. वीणा दीदी,कर्नाटक, ब्र.कु. रंजू दीदी तथा अन्य मेहमान व ब्र.कु. भाई-बहनें।

हाथरस-तपस्या धाम(उ.प्र.)। जिला कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी अर्चना वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका सह जिला प्रभारी ब्र.कु. भावना बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल हुए। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चैतन्य भारत माता का स्वरूप दर्शाया गया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी डॉ. बसंत अग्रवाल, उपजिलाधिकारी बहन प्रज्ञा, ओ.सी. साहब, प्रमुख समाजसेवी अशोक कपूर एवं जिले के उच्च अधिकारी शामिल रहे।

इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के अनुभूति भवन सेवाकेन्द्र द्वारा 75वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ध्वजारोहण के पश्चात् उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज़ के इंदौर पश्चिमी क्षेत्र की प्रभारी ब्र.कु. शशि दीदी, ब्र.कु. यशवनी बहन, अशोक कुमार पाहुजा,सीनियर एडवोकेट एवं समाजसेवी, संतोष महाजन,ओनर,शिवाशीष लॉजिस्टिक तथा पूनम वाधवानी,समाजसेवी।

करतारपुर-पंजाब। 'श्रीमद् भगवत गीता ज्ञान यज्ञ' कार्यक्रम में आये दैनिक सवेरा के मुख्य संपादक शीतल विज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती बहन, ब्र.कु. दीपक भाई,माउण्ट आबू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. निशा बहन तथा अन्य।

'राजयोग पद्धति' द्वारा नशे से सहज होंगे मुक्त: अधीक्षक

जिला पुलिस अधीक्षक नीतिका गहलोत ने 'मेरा गांव नशा मुक्त गांव अभियान' का झंडी दिखाकर किया शुभारंभ

यह अभियान बाढडा व झोझूकलां खंड के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों व गांव-गांव में जाकर सभी को नशा छोड़ने के लिए करेगा प्रेरित।

कादमा-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में संस्थान के मेडिकल विंग और भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'नशा मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत 'मेरा गांव नशा मुक्त गांव' अभियान के उद्‌घाटन समारोह में जिला पुलिस अधीक्षक नीतिका गहलोत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाए जाने वाला राजयोग मेडिटेशन अपने आप में एक ऐसी पद्धति है जिससे सहज ही व्यसनों रूपी राक्षस से मुक्ति पाई जा सकती है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि इस श्रेष्ठ कार्य में जब ब्रह्माकुमारी बहनें आगे आएंगी तो उनकी प्रेरणा और शक्ति से नशा करने वाले युवा सहजतापूर्वक इससे मुक्त होंगे। सीएमओ डॉ. विनोद कुमार ने नशे से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले कुप्रभावों के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि मेडिटेशन नशा मुक्त जीवन के लिए रामबाण औषधि है। उप पुलिस अधीक्षक देशराज,बाढडा ने अभियान के प्रति अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का युवा निर्माण के लिए सकारात्मक प्रयास अवश्य सफल होगा। क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. वसुधा बहन ने कहा कि अध्यात्म या मेडिटेशन हमें आंतरिक रूप से मज़बूत बनाता है जिससे हम इस नशे रूपी राक्षस से सहज छुटकारा पा सकते हैं। कमज़ोर मनोबल के कारण ही हम इन व्यसनों में लिप्त होते हैं। ब्र.कु. ज्योति बहन ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया एवं ब्र.कु. नीलम बहन ने नशा छोड़ने की शपथ दिलाई। कादमा सरपंच प्रतिनिधि महेश फौजी ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम में डॉ. आशीष मान, सुधीर शर्मा सरपंच रामदास लीलाराम कान्हड़ा सरपंच, विकास सरपंच माई कलां, पवन कुमार सरपंच व पूर्व सरपंच जिले सिंह झोझू खुर्द, जिला पार्षद प्रतिनिधि अशोक कुमार सहित विभिन्न गांवों के सरपंच व सैंकड़ो ग्रामीण प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। मंच का सफल संचालन ब्र.कु. सुनील भाई ने किया।

पीसपार्क हॉल में न्यूज़ पोर्टल का भव्य शुभारंभ

'खुली किताब' आम व्यक्ति की बुलंद आवाज़ बन देश को मज़बूत करेगा

गांधीनगर से.28-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के पीसपार्क हॉल में 'खुली किताब' न्यूज़ पोर्टल का भव्य शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर विशेष रूप से शामिल गांधीनगर(उत्तर) की विधायक रीटाबेन पटेल ने कहा कि स्वस्थ समाज के निर्माण में मीडिया का कार्य क्रांतिकारी होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन भी खुली किताब की तरह होना चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि 'खुली किताब' न्यूज़ पोर्टल देश के विकास में न केवल अपना योगदान प्रदान करेगा बल्कि आम व्यक्ति की बुलंद आवाज़ बनकर देश को मज़बूत करेगा। गुजरात राज्यपाल के प्रेस सचिव हीरेन भट्ट ने कहा कि पत्रकार के लिए निरंतर जन हित में निष्पक्ष समाचार को एकत्रित कर जन-जन तक पहुंचाना बड़ा कठिन कार्य है। भट्ट ने कहा कि समाज में 'खुली किताब' न्यूज़ पोर्टल की भागीदारी एक क्रांतिकारी ज़रिया साबित होगी और अपने उद्देश्य में सफल होगी। राजयोगिनी ब्र.कु. तारा दीदी ने वरिष्ठ राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी का शुभेच्छा संदेश देते हुए कहा कि आदरणीय कैलाश दीदी के मार्गदर्शन में लोकार्पित 'खुली किताब' न्यूज़ पोर्टल निरंतर सत्य की खोज के साथ समाज के हरेक वर्ग के कल्याण में भागीदारी के साथ निष्पक्ष रूप में सेवा प्रदान करेगी। वरिष्ठ पत्रकार तुषार कोठारी ने भी अपनी शुभकामनाएं दी। स्थानीय सेवाकेन्द्र की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कृपल बहन ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

गांधीनगर कल्चरल फोरम के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार कृष्णकांत जहा ने पत्रकारिता को परिभाषित करते हुए कहा कि राम अर्थात् सत्य और पत्रकार अर्थात् सत्य की खोज। पत्रकार निरंतर मंथन के साथ राम(सत्य) की खोज में लगा रहता है। उन्होंने हनुमान को इस पृथ्वी पर पहला सकारात्मक पत्रकार बताते हुए कहा कि हनुमान ने सीता की खोज की, सेतु का निर्माण किया और रावण के साथ जंग की शुरुआत की। यही सच्चे मायने में पत्रकार का धर्म है, कर्त्तव्य है।

'खुली किताब' न्यूज़ पोर्टल के संस्थापक संपादक नीलेश कटारिया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि खुली किताब न्यूज़ पोर्टल की टीम ज़िम्मेदारी के साथ समृद्ध और सुरक्षित समाज के निर्माण के साथ-साथ सत्य, न्याय और जागरुकता के माध्यम से लोगों को जोड़ने में निरंतर प्रयासरत रहेगी।

संस्कार परिवर्तन का आधार है हमारा योगबल

रिफ्रेशर कोर्स कराने रशिया से रायपुर पहुंची राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी

रायपुर-छ.ग.। सोवियत गणराज्य रूस स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सदस्यों को रिफ्रेशर कोर्स कराने के लिए रायपुर पहुंची। वे विगत 34 वर्षों से रूस में अपनी सेवाएं दे रही हैं। उनके रायपुर आने पर ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर में 'निर्विघ्न योगी जीवन' विषय पर आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के उद्‌घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत देव भूमि है। यह सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा की अवतरण भूमि है। इसलिए यहाँ की सनातन संस्कृति सभी के मन को लुभाती है। आगे संतोष दीदी ने कहा कि जीवन में श्रेष्ठता लाने के लिए हमें संस्कारों को परिवर्तन कर उसे श्रेष्ठ बनाना होगा। संस्कार परिवर्तन का आधार हमारा योगबल है। योगबल माना एक परमात्मा से प्रीत की लगन में मगन अवस्था। उन्होंने कहा कि राजयोग इस शरीर रूपी गाड़ी को चलाने की कला है। जब हम अपना तन, मन, धन, समय और संकल्प ईश्वर को समर्पित कर देते हैं तब उनसे योग लगाना सहज हो जाता है। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ इन्दौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

'सकारात्मक सोच से तनाव मुक्त जीवन' व 'नशा मुक्त भारत अभियान' की लॉन्चिंग पर भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ने कहा...

जीवन में नियम संयम और धैर्यता द्वारा ही रह सकते हैं तनाव मुक्त

ओम प्रकाश धनखड़,राष्ट्रीय सचिव भाजपा ने ब्रह्माकुमारी बहनों को कलश देकर किया अभियान का शुभारंभ

डिलाइट फॉर एवर बैंक्विट हॉल में हुआ लॉन्चिंग कार्यक्रम का भव्य आयोजन

1200 लोगों ने कार्यक्रम में लिया भाग

फरीदाबाद से.46-हरियाणा। अभियान का शुभारंभ करने के पश्चात् मुख्य अतिथि ओम प्रकाश धनखड़,राष्ट्रीय सचिव भाजपा ने इस श्रेष्ठ कार्य की सराहना करते हुए कहा कि जीवन में नियम, संयम, धैर्यता द्वारा ही हम तनाव मुक्त रह सकते हैं।

तिगांव के विधायक राजेश नागर एवं राजकुमार बोहरा,जिला अध्यक्ष भाजपा भी इस कार्यक्रम में विशेष रूप से शामिल हुए एवं अपनी शुभकामनायें दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,डायरेक्टर,ओम शांति रिट्रीट सेंटर,गुरुग्राम ने बताया कि तनाव मुक्त जीवन के लिए स्वयं का प्रबंधन, सकारात्मक चिंतन और राजयोग मेडिटेशन का नियमित अभ्यास करना होगा। दिल्ली लोधी रोड से आए राजयोगी ब्र.कु. पीयूष भाई ने बताया कि मन को शक्तिशाली बनाकर नशीले पदार्थों से मुक्त हो सकते हैं। ब्र.कु. मधु बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराया और कहा कि रोज़ 30 मिनट राजयोग का अभ्यास ज़रूर करना चाहिए। ब्र.कु. हरीश दीदी,सेक्टर 19 ने शब्दों से सभी का स्वागत किया। एडवोकेट आशा रानी ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि मैंने राजयोग से अपने जीवन में काफी बदलाव पाया। उन्होंने आह्वान किया कि सभी ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर पर जाकर राजयोग मेडिटेशन ज़रूर सीखें। ब्र.कु. आशीष भाई ने जादू के करतब दिखा कर सबका मनोरंजन किया। ब्र.कु. ज्योति भाई, बल्लभगढ़ ने मंच का कुशल संचालन किया। ब्र.कु. उषा दीदी,एनआईटी फरीदाबाद ने सभी का धन्यवाद किया। ब्र.कु. आशा दीदी ने सभी अतिथियों को शॉल व ईश्वरीय सौगात भेंट की। कार्यक्रम में गोपाल शर्मा, संदीप जोशी, प्रेम खट्टर, रिटा. एसीपी दर्शन लाल सहित लगभग 1200 भाई-बहनों ने भाग लिया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Feb, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org